प्रेम पीयूष

विषय - तालिका

प्रेम पीयूष — दिसम्बर १९८५

अनुक्रमणिका — पृष्ट संख्या

१.	आत्मा की चाय	[illegible]
२.	आत्मा के लिये नाश्ता	६
३.	रक्षा मंत्र	१३
४.	सन्ध्या की चाय	१४
५.	पंचामृत	१५
६.	आरती श्री सतगुरू जी की	१६
७.	ध्यान कैसे करें ?	१७
८.	संत कौन है ?	२२
९.	धर्म क्या है ?	[illegible]
१०.	जीवन का लक्ष्य क्या है ?	[illegible]
११.	'नाम धन' की सुरक्षा कैसे करें ?	[illegible]
१२.	जगत को राम मय कैसे देखें ?	[illegible]
१३.	श्रवण मनन निध्यासन	[illegible]
	शब्द	
१४.	आउ जी तुम आउ हमारे	४४
१५.	मेरे मीत गुरू देव	४६
१६.	मेरे मन प्रेम लगो हरि तीर	४९
१७.	गुरू पूरा मेरा गुरू पूरा	५२
१८.	गुरू मेरी पूजा गुरू गोबिंद	५४
१९.	हरि हरि तेरा नाम है	५६
२०.	कर कृपा प्रभु दीन दयाला	५९
२१.	जो सुख प्रभु गोबिंद की सेवा	६१

२२. ठाकुर तुझ बिन आहि न मोरा ६५
२३. साधो रचना राम बनाई ६८
२४. श्री राम नाम उचारु मना ७१
२५. तुम्ह करहु दया मेरे सांई ७४
२६. असां तेरी मेहर नाल तरना जी ७७
२७. अपने प्रीतम सिउ बन आई ७९
२८. किस नाल की जै दोस्ती ८२
२९. राख सदा प्रभु अपने साथ ८४
३०. अन्तर राम राइ प्रकटे ८६
३१. लांवा ८९
३२. आनन्द साहिब जी ९३
३३. हरि चरण कमल की टेक ९९
३४. मेरे राम राई तू संता का संत तेरे १०१
३५. मेरे साहिबा तेरे चोज विडाना १०३
३६. हरि जीउ सदा तेरी सरणाई १०६
३७. शिव जी की स्तुति ११०

भजन

३८. चरणों में शीश नवाया ११२
३९. श्री राम के चरणों में जो भी आ गया ११३
४०. शब्द संकीर्तन (बोल हरि नाम) ११४
४१. नित राम सरोवर में नहाया करो ११५
४२. दे दो अपनी भक्ति ११६
४३. ले लो हरि का नाम अमृत बरस रहा ११७
४४. गोबिंद तू ही गोपाल तू ही ११९
४५. मेरा जीवन सारा बीते १२०
४६. राम नाम में रंग ले चोला १२१

४७.	गोपाल तेरा आसरा	१२२
४८.	हर दिन है नया हर पल है नया	१२३
४९.	श्री राम हरे श्रीराम हरे	१२४
५०.	तेरा नाम रूड़ो रूप रूणो	१२६
५१.	हरि इकसै नाल मैं दोस्ती	१२७
५२.	रामा तेरे चरणों की	१२८
५३.	(याचना) नाम के लिए	१२९
५४.	(प्रार्थना) दिन चर्या हेतु	१३०
५५.	मैंने मन में श्याम रंग घोला	१३२
५६.	रख लाज मेरी सतगुरू	१३३
५७.	कैसे पाऊं प्रभु दीदार तेरा	१३४
५८.	आरती—जगमग जगमग ज्योति जगी है	१३६
५९.	आरती गगन मे थाल	१३८
६०.	अरदास—पवण गुरू	१३९
६१.	प्रार्थना	१४०
६२.	प्यारे प्रभु का दर्शन कैसे हो ?	१४१
६३.	विनय	१४६

'अच्छी पुस्तक आप की सच्ची सखी मार्ग दर्शिका व गुरू है। जो आप के जीवन का पथ प्रदर्शन करती है। अतः पढ़िए मनन कीजिए व नया जीवन पाइए।

"श्रीराम"

आत्मा की चाय

"Bed Tea for the Soul"

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला !!

५ बार

१. मन २. बुद्धि ३. शरीर ४. परिवार
५. बाहर जहाँ भी जाते हैं।

आत्मा के लिये नाश्ता
(Break Fast for the Soul)
क्या कृपा चाहिए ?

करो दया, करो दया, करो दया मेरे साँई ।
ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर, सदा सदा तुध ध्याई ॥
श्वास श्वास सिमरु गोविन्द,
मन अंतर की उतरे चित
याचक जन याचै प्रभु दान,
कर कृपा देवो हरि नाम ।
साध जना की माँगू धूरि,
पारब्रह्म मेरी श्रद्धा पूरि ।
सदा सदा प्रभु के गुण गाँऊ,
श्वास श्वास प्रभु तुम्हें धिआऊ
चरण कमल सिउ लागै प्रीत,
भक्ति करूं प्रभु कीं नित नीत ।
एक ओट एको आधार,
नानक मांगे नाम प्रभु सार ।
मंगल भवन अमंगल हारी,
द्रवहु सु दशरथ अजिर बिहारी ।
दीन दयाल विरद सम्भारी,
हरहु नाथ मम संकट भारी ।
राम कृपा नाशहि सब रोगा,
जो एहि भांति बने संयोगा ।
जां पर कृपा राम की होई,
तां पर कृपा करे सब कोई ।

अब प्रभु कृपा करहु यह भांति,
सब तज भजन करु दिन राति।
जा पर कृपा दृष्टि अनुकूला,
तांहि न व्यापि त्रिविध भवशूला।

राखा एक हमारा स्वामी,
सगल घटा का अर्न्तयामी।
ऐसी कृपा करो प्रभु मेरे,
हरि नानक विसर न काहू बेरे।

जगत जलंधा राख लै,
अपनी कृपा धार।
जीत दुआरे ऊबरे,
जिते लेहो उबार।

सतगुरु सुख बेखालिआ,
सच्चा शब्द विचार।
नानक अवरु न सूझहि,
हरि बिन बख़सन हार।

दंडवत वंदना अनेक बार,
सर्व कला समरथ।
डोलन ते राखो प्रभु,
देकर नानक हथ।

प्यान ध्यान किछु कर्म न जाणा,
सार न जाणा तेरी।
सबसे वड़ा सतगुरु नानक,
जिन कल राखी मेरी।

सर्व कला भरपूर प्रभु,
बिरथा जानन हार ।
जाके सिमरन उधरिये,
नानक तिस बलिहार ।

करन करन प्रभु एक है,
दूसर नाही कोय ।
नानक तिस बलिहार ने,
जल थल महियल सोय ।

दीन दरद दुख भंजना,
हरि घट–घट नाथ अनाथ ।
शरण तुम्हारी आइओ,
नानक के प्रभु साथ ।

सकल द्वार को छांड़ के,
मैं गहिओ तुम्हारो द्वार ।
बाँह गहे की लाज अस,
गोबन्दि दास तुम्हार ।

जे मैं भूल बिगाड़िया,
ना कर मैला चित ।
साहिब गौरा लौड़िए,
नफ़र बिगाड़ें नित ।

जैसा कैसा हूं मैं तेरा,
क्षमा करो सब अवगुण मेरा ।
जेता समुद्र सागर नीर भरिआ,
तेते अवगुण हमारे ।

दया करो किछु मेहर उपावो,
डूबदे पत्थर तारे ।
जीग्रड़ा ग्रगनि बराबर तपै,
भीतर वगै काती ।

प्रणवत नानक हुकुम पछाणै,
सुख होवे दिन राती ।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम देव देव: ।
श्री राम जय राम जय जय राम
शंकर हरि ग्रोम, जय जय सिया राम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला !!

५ बार

श्लोक :— थर जियड़े इक टेक तूं,
लहे बिडानी ग्रास ।
नानक नाम धिग्राईऐ,
कारज ग्रावे रास ।

★

रक्षा मंत्र

(सब अंगो पर हाथ लगाते हुए यह मंत्र पढ़े)
सिर मस्तक रक्षा पारब्रह्म,
हस्त काया रक्षा परमेश्वरा ।
आत्म रक्षा गोपाल स्वामी,
धन चरण रक्षा जगदीश्वर ।

सर्व रक्षा गुरु दयालह,
भय दुख विनाशनै ।
भक्ति वत्सल अनाथ नाथे,
शरण नानक पुरख अच्युत ।

रोगन ते अरु सोगन ते,
जल जोगन ते बहु भांति बचावै ।
चलावत शस्त्र अनेक घाव,
तउ तन एक लागत न पावै ।

राखत है अपनो कर देकर,
पाप समूह न भेटन पावै ।
और की बात कहा कहूं सो,
पेट ही के पट बीच बचावै ।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति !

"सन्ध्या की चाय"

(Evening Tea for the Soul)

पहली सन्ध्या तारणी, तार माता तारणी,
सगले दुख निवारणी ।
चार पहर मेरे घर का धन्धा,
एक घड़ी श्री राम की ।

एक घड़ी आधी घड़ी,
आध घड़ी परवान है ।
सच्चा श्रीं भगवान है,
गोपिआं दे विच कान्ह है ।

राधे रुकमणि राधे रघुबीर,
श्री राम जी आए लंका जीत ।
हनुमान का गीट कड़ा,
लक्ष्मण का जंज़ीरे ।

जो कोई सन्ध्या पढ़े पढ़ावै,
नर्मी शख्ती कदे न आवै ।
कदे न देखे भीड़ ए ।

(इसे सात बार बोलना है)

रात का भोजन (आत्मा का)
(Dinner for the Soul)
(सर्वरोग नाश के लिए)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।
राम कृपा नार्शांह सब रोगा,
जो एहि भान्ति बने संयोगा।
जां पर कृपा राम कीं होई,
तां पर कृपा करें सब कोई।
जां पर कृपा दृष्टि अनुकूला,
तांहि न व्यापि त्रिविध भवशूला।
राखा एक हमारा स्वामी,
सगल घटा का अर्न्तयामी ।

प्रतिदिन रात को सोते समय ५ बार हर चौपाई को अवश्य पढ़े । गिलास में पानी लें, व पानी में चम्मच हिलाते हुए पंचामृत बना कर सब को दें । "श्री राम"

आरती सतगुरु की

ॐ जय सतगुरु देवा, जय सतगुरु देवा,
अपने भक्तों के संकट, तुम दूर करो देवा ।
जय सतगुरु.................

तुम हो अलख अविनाशी, तुम अन्तर्यामी,
तुम ही करता धरता, तुम सबके स्वामी ।
जय सतगुरु.................

अपना रूप दिखाते कण-कण व्याप रहे,
तेरी कृपा का मेरे प्रभु जी, हर पल ध्यान रहे ।
जय सतगुरु.................

हर पल तुझको ध्याऊँ, तेरे गुण गाऊँ,
बार-बार चरणों में तेरे, मैं प्रभु शीश नवाऊँ
जय सतगुरु.................

घट में आप बिराजौ, मन मन्दिर साजै,
बाजै अनहद बाजै, जय श्रीराम हरे ।
जय सतगुरु.................

जगमग ज्योति सुहावै, रुप तेरा प्यारा,
श्वेत वर्ण उजियारा, सतगुरु है मेरा ।
जय सतगुरु.................

सब पर कृपा करो मेरे प्यारे गुरुदेवा,
क्षमा करो सब अवगुण, बस तेरी ही सेवा ।
जय सतगुरु.................

तेरे द्वारे आई प्रभु जी, करना तुम रक्षा,
इक पल भी न बिसरे, नाम प्रभु तेरा ।
जय सयगुरु.................

ध्यान कैसे करें ?

घर के सभी कामो से निवृत्त हो जाइऐ। क्योंकि यदि कोई भी कार्य पड़ा होगा तो बार बार मन उस काम में ही जाएगा।

या फिर प्रात: ४ से ५ बजे ब्रह्म मुहूर्त्त में जब सब ओर से मन पूर्णतः शान्त होता है–ध्यान लगावे।

सर्व प्रथम कर कृपा प्रभु दीन दयाला तेरी ओट पूर्ण गोपाला, मंत्र को एक माला करें फिर "श्रीराम" या जो भी आपका गुरुमंत्र है, थोड़ी देर उच्चारण करें– फिर सभी ओर से मन को हटा कर केवल 'श्रीराम' ही बोलें, श्रीराम ही सुनें, श्रीराम ही देखें–अन्तर में।

अन्तर में देखिए कि सोनहरे अक्षरों में श्रीराम लिखा हुआ दमक रहा है।

हमारा अन्तर मुख निरंतर 'श्रीराम' बोल रहा है। इसी ध्वनि को अन्तर के कानों से सुनें। बाहर की जिह्वा स्वत: ही शान्त होकर तालू से चिपक जावेगी।

अन्तर मुख से श्रीराम बोलते बोलते उसी में लीन हो जावें।

आरम्भ में अनेकानेक विचार आपको परेशान करेंगे, लेकिन थोड़े समय के जप के बाद मन पूर्णतः ऐकाग्र हो जावेगा।

मन तो पालतू पशु के समान है, जिसे यदि आप बन्धन में बाँध देंगी, तो पहले थोड़ी देर चीख पुकार करेगा। स्वतंत्र होकर भागने की ज़िद करेगा (चंचल है न) फिर स्वत: थोड़ी देर बाद शान्त हो जावेगा और काल्पनिक विचार भी उसे उद्विग्न नही करेंगे।

अत: पहले मन को ऐकाग्र कीजिये हर समय श्रीराम बोलने का अभ्यास बना लो अन्तर में। फिर अभ्यास के परिणाम स्वरुप यह अनवरत चलती ध्वनि आप को स्वयं सुनाई देगी। हर कार्य में ही आप को श्रीराम सुनाई देगा।

और नाम के प्रभाव से सांसारिक, आसक्ति स्वत: समाप्त हो जावेगी। क्योंकि जहाँ आसक्ति होती है मन वहीं जाता है।

इस प्रकार मौन, शांत, स्थिर व निश्चल होकर मन को ऐकाग्र कर आन्तरिक मुख द्वारा नाम जप करें।

समय कोई निश्चित नहीं, जितनी देर भी आप स्थिर होकर बैठ सकती हैं—आनन्द लें।

१. ध्यान करने का एक निश्चित स्थान व आसन होना चाहिए।

२. ध्यान करने का समय भी निश्चित करें।

३. ध्यान में किसी की निन्दा, चुगली ईर्ष्या, द्वेष के विकारों को न आने दें।

४. ध्यान में बैठने से पूर्व हाथ पांव धोकर मुख को कुल्ला कर साफ कर लें।

५. ध्यान में केवल एक ही मंत्र से मन को ऐकाग्र करें।

६. यदि फिर भी ध्यान न लगे तो अपने समक्ष अपने सतगुरु को बैठाकर उनके साथ अन्तर्मुख से 'श्रीराम' उच्चारण करें।

७. स्वयं को ढीला छोड़ केवल नाम में ही मन को ऐकाग्र करें।

८. समस्त इन्द्रियाँ, उसके अच्छे बुरे कार्य अपने सतगुरु के चरणों में समर्पित कर दी।

९. 'श्रीराम' नाम का जप भी निष्काम भाव से करना है क्योंकि जप के समय यदि कोई भी भावना या इच्छा मन में जाग्रत हो गई तो वह जप उसी इच्छा हेतु हो जावेगा। जो मानसिक कर्म होगा। और उसका फल भी अवश्य मिलेगा—अच्छा या बुरा—यह इच्छा पर निर्भर है।

१०. समस्त श्वास—श्वासों में चलता नाम भी सतगुरु के चरणों में समर्पित कर देना है। नाम रुपी पुष्प जब सतगुरु के चरणों में चढ़ते जायेंगे तो फिर हम अपनी कोई भी इच्छा पूर्ण करने की प्रार्थना अपने सतगुरु भी प्रभु से कर सकते हैं।

क्योंकि यदि कुछ दोगे नहीं तो पाओगे कैसे? अत: पहले निश्काम नाम समर्पण करो—फिर कुछ माँगने के अधिकारी होंगे।

वैसे नाम जप का इतना प्रभाव है कि इच्छाएं स्वत: ही समाप्त हो जायेगी। इच्छा करो तो केवल उसके नाम व ध्यान की कि प्रभु तेरा नाम एक क्षण को भी न भूलूं ऐसी कृपा करो यही इच्छा मन में करें।

जैसे–

ध्यान मूलं गुरु मूर्ति
पूजा मूलं गुरु पदम्
मंत्र मूलं गुरु वाक्यम्
मोक्ष मूलं गुरु कृपा ॥

सारांश-

१. ध्यान मैं गुरु की मूर्ति समक्ष रखें।
२. गुरु के चरणों की पूजा व ध्यान करें।
३. गुरु के वाक्य या मंत्र द्वारा मन को दृढ़ करें।
४. गुरु कृपा को ही मोक्ष का द्वार समझें।

अन्तर में चल रहे नाम जप के साथ अपनी समस्त वृत्तियां व ध्यान को जोड़ दो तभी बाहर का सम्बन्ध टूट कर–उस शब्द के साथ जुड़ जाएगा। यही ऐकाकारता है। इसी को 'सुरत शब्द का मेल' कहा गया है. यही ध्यान की पराकाष्ठा है. यही अलौकिक आनन्द की शान्ति का साधन है.

इसी स्थिति में समस्त इच्छाएं कामनाएँ समाप्त हो कर–नाम के साथ जुड़ जाती है–व अपने शरीर का भी अस्तित्व नहीं अनुभव होता ।

अतः कृपा माँगते हुए अपने सतगुरु के मंत्र को दृढ़ करें व नियमित रुप से ध्यान करने का अभ्यास बनावें । थोड़े प्रयत्न के बाद ही आप स्वयं परमानन्द की अलौकिकता अनुभव करेंगी ।

"श्रीराम"

संत कौन है ?

स + अन्त

स = स्वयं

अन्त = समाप्ति

अर्थात् जहाँ स्वयं का भाव नही है। अहं नष्ट हो गया है, जो केवल दूसरों के कल्याण के लिए ही इस नश्वर संसार में देह धारण करता है। जिसका समस्त जीवन केवल लोक कल्याण हेतु ही परवान हो जाता है– वही पूर्ण सन्त है।

लक्षण :-

जिसका मन.............................

१. राग द्वेष से रहित है।

२. विकारों से मुक्त है।

३. प्रत्येक जीव के लिए जहाँ कल्याण की ही भावना है।

४. जो निन्दा स्तुति से परे है।

५. जिसने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, मद, मत्सर रुपी अनेकों राक्षसों पर विजय प्राप्त कर ली है।

६. जिसके शरीर में देवता निवास करते हैं दूसरे शब्दों प्रकट हैं।

७. जिसके हर श्वास में 'श्रीराम' बसा है।

८. जिसके रोम रोम से नाम की किरणों अपना आलोक बिखेरती है।

९. जिसके नेत्रों में सभी के लिए निष्छल व अटूट प्रेम भरा है।

१०. जो संसार में रहते हुए समस्त कार्य करते हुए भी पूर्ण वैराग्य धारण किए है।

वही पूर्ण सन्त है। वही सतगुरु है। और वही साक्षात परमेश्वर का रुप है।

क्योंकि परमेश्वर ही लोक कल्याण के लिए, जीवों के दुखों को नाश करने के लिए उनका उद्धार करने के लिए सन्तों के रुप में इस नश्वर संसार में मनुष्य की देह में आते हैं। और माया मोह के अन्धकार में पड़े हुए जीवों को, नाम के द्वारा, प्रकाश की ओर ले जाते हैं। उनको भूले हुए परमेश्वर की याद दिलाते हैं—महान सन्तों की वाणी द्वारा उनकी आत्मा को झिझोड़ कर जगा देते हैं—जो न जाने कितने जन्मों से सोइ हुई होती है।

सन्त अर्थात् सतगुरु वह करता है जो परमात्मा नही कर सकता अर्थात् इन्सान के साथ रहने और संसार में कार्य करने हेतु जीवों को माया मोह के अन्धेरे कुएँ से

निकालने हेतु–परमात्मा को मनुष्य के रुप में सतगुरु बन कर आना ही पड़ता है। सतगुरु के शब्द, परमात्मा के ही शब्द हैं वे इन्सान की ज़बान से बोले जाते हैं, किन्तु उनकी हाँ परमात्मा की हाँ है। उनके हाथ परमात्मा के हाथ है, उनकी वाणी परमात्मा की वाणी है।

वह अपने भक्तों की रक्षा करने के लिए उन्हें चिन्ता मुक्त करने के लिए उनके समस्त अपराध, उनकी बीमारी, उनकी तमाम तकलीफ़े अपने उपर ले लेता है–चाहे इसमें उसे कितना भी कष्ट सहन करना पड़े–किन्तु अपने भक्तों की माँग या प्रार्थना को हर प्रकार से वह पूर्ण करता है।

चाहे उसे आप 'शाहों का शान्शाह' कहे चाहे 'फक्कड़ फ़कीर' उसे कोई भी अन्तर नहीं पड़ता। उसको कुछ भी नही चाहिए। उसे खुश करना है तो उसे अधिक से अधिक नाम का भोजन दो। वह अन्तंर्यामीं है। घर बैठे भी आप उसे जो भी नाम समर्पण करेंगी उस तक अवश्य पहुँच जाएगा। जो आप का अखुट भंडार होगा–और सतगुरु का भोजन।

ऐसा पूर्ण सन्त ही सतगुरु बनने योग्य है। वही पूर्ण परमेश्वर है–जब नाम जपते जपते आप का मन निश्छल, निर्मल, स्वच्छ हो जएगा तो उस स्वच्छ दर्पण में आप अपने प्यारे प्रभु का साकार दर्शन व अलौकिक आनन्द प्राप्त कर सकती हैं।

मन में कभी भी संशय न आने दें। भ्रम, शंका, संशय रहित होकर पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से उसकी वाणी को अन्तर्निहित करें और जीवन को सार्थक बनावें। अधिक से अधिक नाम जप करें व इस सतगुरु रुपी सगुण परमात्मा के आदेशों का सत्यता से पालन करें।

वाणी का प्रभाव एक दम मन पर नही होगा क्योंकि कई जन्मों के मैल का आवरण इस पर पड़ा है अतः वाणी सुनते सुनते प्रभु का गुण गान करते हुए—नाम जप करते करते यदि अश्रु धारा प्रवाहित होती है—तो डरिए नही यह तो मन पर जमी हुई गन्दगी को साफ करती है—जिस प्रकार कमरे का फ़र्श पानी से धोकर स्वच्छ हो जाता है उसी प्रकार अन्तर के फ़र्श को धोने के लिए भी निश्छल अश्रु की धारा प्रवाहित होती है, तभी उस स्वच्छ अन्तर में प्रभु का दर्शन होगा। इसके लिए भी निरंतर जप करते जाना है, एक क्षण भी समय व्यर्थ मत करो, समय बहुत कम है। न जाने कौनसा अन्तिम श्वास हो अतः संसार के समस्त कार्य करते हुए भी उसे व उसका नाम मत भूलो। फिर तुममें और संत में कोई अन्तर नहीं।

"श्रीराम"

"कर कृपा संत मिले
मोहें तिन ते धीरज पाया
सती मंत्र दियो मोहे निर्भय
गुरु का मंत्र हढ़ाया"

धर्म क्या है ?

किसी क्षण भी उस परम पिता के नाम व ध्यान को न भूलना ही धर्म है। दैहिक दैविक भौतिक कर्त्तव्यों का नाम के साथ पूर्ण रुप से पालन करना ही धर्म है। अर्थात् शरीर से प्रत्येक कार्य प्रभु का समझ कर करना है।

दैहिक–समस्त प्रकृति में प्रभु का हीं दर्शन करना है।

भौतिक–

१. संसार का प्रत्येक कार्य प्रभु के लिए करना है।
२. अपने अन्तर में निहित सत्यता का अनुभव करना हीं धर्म है।
३. अपने अन्तर में जाग्रत सदवृत्तियों द्वारा किए गए कर्म ही धर्म है।
४. धार्मिक ग्रन्थों द्वारा परमात्मा के आदेशों का पालन करना ही धर्म है।
५. स्वयं को जानने की इच्छा, प्रभु भक्ति सेवा भावना, कीर्तन सतसंग धर्म के यह चार स्वरुप हैं।

अभी तक चार युग व्यतीत हो चुके हैं। सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग, कलि युग।

१. सतयुग–के धर्म का रुप है–ध्यान
२. त्रेता युग–के धर्म का रुप है–भजन पूजा
३. द्वापर युग–के धर्म का रुप है–सेवा
४. कलि युग–के धर्म का रुप है–हरि कीर्तन या श्रीराम नाम जप

१. ध्यान—ध्यान में अपने प्रियतम परमात्मा के साथ ऐकाकार होने का प्रयास करना, अधिक से अधिक अपनी वृत्ति को अन्तर की ध्वनि के साथ जोड़ना अधिक से अधिक अनवरत नाम जप करना ही ध्यान है।

२. भजन पूजा—निरंतर नाम जप करते हुए अपने आराध्य देव को सम्मुख रख कर प्यारे प्रभु की मानसिक पूजा करना—समस्त कार्य ही प्रभु की पूजा समझ कर करना, या भज़न करते हुए, प्रत्येक कार्य उसकी पूजा समझना। और कार्य प्रभु को अर्पित करते जाना।

३. सेवा—जहाँ तक भी हो, सेवा भाव मन में रखें—मनसा, वाचा, कर्मणा से अपने सम्बन्धी, गरीब, अपंग बीमार जो कोई भी हो प्रभु का रुप समझ अपनी सामर्थ्य के अनुसार सेवा करें। और निश्काम भाव से नाम जप करते हुए हर कार्य अपने सतगुरु के चरणों में अर्पित करते जाओ।

४. हरि कीर्तन—कलियुग का धर्म यज्ञ सभी कुछ नाम जप व हरि कीर्तन है। अधिक से अधिक अपनी जिह्वा से श्रीराम जी के गुणों को गाना है हरि कीर्तन करते हुए ही जगत के समस्त कार्य भी करने हैं। मन में प्यारे का ध्यान मुख में नाम व हाथों से उसका काम करना है। यही यज्ञ है। यही तप है।

राम का गुण गान करने से सम्पूर्ण वातावरण पवित्र हो जाता है समस्त शरीर बिकार रहित होकर निर्मल व

फूल के समान हल्का हो जाता है। स्फूर्ति बनी रहती है। वातावरण में नाम की झंकार व पवित्र नाम की गूँज बस जती है।

राम नाम का जप कीर्तन स्वयं में ही महा यज्ञ हैं इसमें कोई त्रुटि नहीं कोई प्रायश्चित नहीं—कोई आडम्बर नहीं। बस मौन या वाणी द्वारा जैसे भी आपको सहज लगे नाम जप करते जाना है।

हर श्वास में हो सिमरण तेरा,
यूंहीं बीत जाए जीवन मेरा ॥

यही प्यारे प्रभु से प्रार्थना करनी है, कि तेरा नाम, तेरा ध्यान एक क्षण को भी विस्मृत न हो। सभी सांसारिक कार्यों की सिद्धि का श्रेय नाम जप में ही निहित है।

नाम जप ही प्रभु की साकारता का साधन है।

नाम जप के सदके नवों निधि रिद्धि सिद्धि स्वयंमेव पीछे पीछे रहती है समस्त संसारी कामनाओं का त्याग कर केवल नाम की इच्छा जाग्रत करो।

अधिक से अधिक संतों की वाणी सुनिए, यह इच्छा अपने आप जाग्रत हो जाएगी—और एक बार जाग्रत हो गई तो फिर संसार की कोई शक्ति—इसे सुला नही सकती। फिर तो इसे संतों की वाणी रुपी राम नाम व प्रभु के गुण गान का भोजन अवश्य ही चाहिए। अन्यथा जाग्रत आत्मा विना पानी की मछली के समान तड़पेगी,

छटपटाएगी, और सतसंग पाकर, अपने सतगुरु का दर्शन पाकर ही सन्तुष्ट होगी।

जैसे गुरु साहब ने भी कहा है :

साध संग प्रगटे नारायण,
नानक दास सब दुख पलायण।
जीत लिए ओह महा विखादी
सहज सुहेली वाणी।
कहो नानक मन भया परगासा
पाया पद निरवाणी

(गुरुवाणी)

अतः प्यारी बहिनों निरंतर ही 'श्रीराम' नाम का जप करें। सभी कार्य करते हुए–श्रीराम बोलने का अभ्यास बना लें। परिणाम आप स्वयं अनुभव करेंगी। फिर तो आनन्द ही आनन्द है।

"श्रीराम"

जीवन का लक्ष्य क्या ?

जीवन की नय्या पार करने के लिए साधन चाहिए। केवल खाना–पीना, मनोरंजन करना, बच्चों को बड़ा करना, उनकी शादियाँ करना यही जीवन का लक्ष्य नही है। यह तो कर्त्तव्य है। परन्तु इस कर्त्तव्य को पूर्ण करते हुए अपना उद्धार कैसे हो उसके लिए कुछ त्याग करना है और कुछ ग्रहण करना है। अब यही पता लगाना है कि किस किस अवगुण से ये जीवन नैया डूबती है और किन किन गुणों से पार हो जाती है।

जैसा कि गुरु साहिब ने गुरुवाणी में कहा है–

स्वाद वाद इरख मद माया,
इन संग लाग रतन जनम गवाया।

यदि हम अपना समय भोजन के स्वादों में या वाद विवादों में ही नष्ट कर देते हैं या ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा, चुगली, ममता में नष्ट करते हैं तो जीवन व्यर्थ है इनको निकाल कर इनके रिक्त स्थान को–

सदगुण–जप, तप, संयम, सत्कर्म से पूर्ण करें।

'वाद विवाद काहू से न कीजै
रसना राम रसायन पीजै'

जप क्या है ? ईश्वर के नाम को या मंत्र को बार बार वाणीं द्वारा Repeat करना ही जप है।

तप—गर्मी सर्दी भूख प्यास की परवाह न करते हुए सतसंग, कथा, कीर्तन नाम जप का नियम पूरा करना व दुखियों की सेवा करना ही तप हैं।

संयम—अपनी इन्द्रियों तथा मन पर कन्ट्रोल रखना सयंम कहलाता है। इच्छाओं को कम करना—जैसे हरि इच्छा हो वैसे ही रहना संयम कहलाता है।

सतकर्म—सदा अच्छे कर्म करना सेवा, सिमरण सतसंग आदि में जीवन व्यतीत करना उसका नाम जपते हुए कार्य करना ही सतकर्म है। शेष अब असार है।

दुर्गुण

स्वाद—जीह्वा द्वारा रस या खूब चटपटेदार व्यंजन खाने को मन चाहने का नाम स्वाद है। वैसे भी गीता के आदेशानुसार हमें सात्विक आहार खाने को कहा है खटाई, लाल मिर्च, खूब तला हुआ या बासी यह तामसी आहार है इससे क्रोध बढ़ता है शरीर को भी हानि होती है इसलिए दूध फल या सादा आहार लेना चाहिए।

नाम विसार करे रस भोग,
सुख सुपने नही तन में रोग।

इसलिए खाली रस के लिए ही भोजन नही करना।

"We should live to eat
Not eat to live"

वाद—इसका अर्थ है वाद विवाद यानि कहीं हमें कोई गलत बात कह दे तो अपने आप को ठीक साबित करने

के लिए तर्क वितर्क करते रहना या अपने मन में उसी विचार पर सोचते रहना। संत महापुरुष तो कहते हैं–

'वाद विवाद काहू से न कीजै
रसना राम रसायन पीजै'

अर्थात उस समय में अपने मन में गुरुमंत्र उच्चारण करो या करकृपा का मंत्र उच्चारण करो और उन बातों की ओर ढील छोड़ दो तभी मन शान्त रहेगा नही तो Tension से कई मानसिक रोग हो जाते हैं।

ईर्ष्या–किसी को उन्नति करते हुए देख कर मन में Feel करना ईर्ष्या कहलाता है। ईर्ष्या की जगह प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए हमें भी वैसा ही आचरण करना चाहिए कि हम भी उन्नति के पथ पर अग्रसर हों।

मद–मद का अर्थ है अहंकार, यह संसारिक मद तो सब नश्वर है आज हमें शरीर का मद है कल इस शरीर को बीमारी लग सकती है। पल में ही कुछ का कुछ हो सकता है इसलिए काहे का अभिमान ऐसे ही पैसे का अभिमान या रिश्ते सम्बंधियों का अभिमान सब यह नश्वर हैं।

जिसके अन्तर राज अभिमान,
सो नरक पाती होवत सुआन।

माया–गो गोचर जह लग जाई,
सो तुम माया जानो भाई।

इस माया में निरंतर अपने रमे हुए राम के दर्शन करने से इस माया का प्रभाव नहीं होता है।

"नाम धन" की सुरक्षा कैसे करें ?

'धन' शब्द में कितना आकर्षण है कि इसका नाम सुनते ही चेहरे पर अजीब सी रौनक छा जाती है। और आँखों में चमक आ जाती है। इसमें इतनी मस्ती भरी है कि जिस व्यक्ति को यह बहुतायत से प्राप्त हो जाता है उसका रंग ढंग ही बदल जाता है क्योंकि इसकी सहायता से वह संसार के सभी सुख उपभोग प्राप्त कर सकता है। धन की आवश्यकता वर्तमान जीवन जीने के लिए भी है और भविष्य काल के लिए भी है। इसलिए मनुष्य धन का संग्रह वर्तमान को सुखी बनाने के लिए तथा भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए करता है। लेकिन इसका उपयोग व्यक्ति इसी जीवन में करता है।

'धन' शब्द के आगे यदि 'नाम' शब्द जोड़ दिया जाए तो यह अलौकि वस्तु बन जाती है और जब यह धन व्यक्ति को प्राप्त हो जाता है, तो इसकी मस्ती कुछ और ही हो जाती है इसे वही जान सकता है जिसने इसे प्राप्त कर लिया है। तभी तो गुरु साहिब ने गुरुवाणी में कहा है—

कौन वडा माया वडिआई,
न
सोई वडा जिस राम लिव लाई।

नाम रुपी धन प्राप्त कर मनुष्य अपने आप को सांसारिक धरातल से थोड़ा ऊँचा उठा लेता है और

जीवन के हर्ष–शोक उसे व्याप्त नही होते । उसका भविष्य तो सुखी हो ही जाता है।

यह लोक सुखी परलोक सुहेले,
नानक हर प्रभु आए मेले ।

लौकिक 'धन' व्यक्ति विशेष को ही लाभ पहुँचाता है लेकिन जब यह उत्तराधिकार के रुप में मिलता है तो अक्सर दुख का कारण बन जाता है लेकिन नाम रुपी धन व्यक्ति विशेष को तो लाभ पहुंचाता ही है और जब यह उत्तराधिकार रुप में प्राप्त हो जाता है तो इससे कई पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है।

तभी तो गुरु साहिब कहते हैं–

अमृत नाम भोजन नित भुंचहु,
तन मन होय सुहेला ।
माँगू दान ठाकुर नाम
अवर कछु मेरे संग न चाले
मिले कृपा गुण गान ॥

लौकिक धन की मनुष्य विभिन्न प्रकार से सुरक्षा करता है। धन को सुरक्षित रखने के लिए वह उसे बैंक में जमा करवा देता है अथवा उसके सर्टिफिकेट खरीदता है जिससे धन सुरक्षित भी रहता है और बढ़ता भी है।

'नाम धन' ईश्वर की अनमोल देन है। अत: इसे सहेज कर रखना अथवा इसकी सुरक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है। किसी भी वस्तु की सुरक्षा के लिए

पात्र की आवश्यकता होती है। नाम रुपी धन को सहेज कर रखने के लिए नम्रता रुपी पात्र की आवश्यकता है अथवा यह नाम का खजाना वैसे ही लुढ़क जाएगा जैसे वर्षा का जल। जब वर्षा आती है तो वह बिना किसी भेद–भाव के पहाड़ों पर भी गिरती है और समतल मैदानों में भी। समतल मैदान उसे अपने आप में समेट लेता है लेकिन पहाड़ों की ऊँची नीची घाटियां उसे सम्भाल नहीं सकती। इसलिए पहाड़ों पर गिरा जल भी मैदानों में आ जाता है और मैदान समतल होने के कारण अपने आप में उसे समेट लेते हैं।

इसी प्रकार जो मनुष्य नम्र होते हैं वह समतल धरातल के समान 'नाम धन' के खजाने को अपने अन्दर समेट लेते हैं लेकिन जो मनुष्य अहंकार के वशीभूत होकर पहाड़ों के समान अपने आप को ऊँचा समझते हैं वह इसे सुरक्षित रहीं रख सकते। अर्थात् नाम धन को सुरक्षित रखने के लिए नम्रता रुपी पात्र की आवश्यकता है।

गुरु साहिब कहते हैं–

हउमें मेरा ठाकि रहाए
सहजे ही सचु पाइआ ॥
तनु मनु सीतल क्रोध निवारे
हउयै यारि समाइआं ॥
हउये विच सद जले सरीरा
करमु होवै भेटे गुरु पूरा ॥

अहम् भाव ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। इसकी समाप्ति हो जाने पर सभी विकारों का अन्त हो जाता है और मन तब शांत हो जाता है जो कि नाम धन की सुरक्षा के लिए नितांत आवश्यक है।

साधारण जीवन में हम देखते हैं कि किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए हमें साधना करनी पड़ती है फिर उसकी प्राप्ति होती है लेकिन अलौकिक हस्तियां वस्तु की प्राप्ति होने पर उसे सहेज कर रखने के लिए साधना करते है कि कहीं यह खज़ाना लुढ़क न जाए। गुरु नानक देव जी को भी जब सभी सिद्धियां और नाम धन का खज़ाना प्राप्त हो गया तो उन्होंने पारब्रह्म से जाकर नम्रता और गरीबी का पात्र माँगा। ऐसा है महान अलौकिक शक्तियों का जीवन। यह ऐसा अनमोल धन है जिसे कोई भी व्यक्ति हमसे न छीन सकता है. न चोरी कर सकता है। वरन् यह दिन प्रति दिन बढ़ता ही जाता है। लेकिन ऐसा तभी सम्भव है जब कि हममें नम्रता है। यदि हममें अहम् भाव आ गया तो यह खज़ाना वर्षा के जल के समान ही लुढ़क जाएगा।

"श्रीराम"

'परम प्रकाश रूप दिन राती
नहीं कछु चाहिए दीया घृत बाती"

परमात्मा ज्योति स्वरूप है। उसका प्रकाश समस्त ब्रह्मांड में व्याप्त हो रहा है। प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ

उसी से देदीप्यमान हो रहा है। प्रकृति का प्रत्येक उपकरण सूरज चन्द्रमा आदि में भी उसका प्रकाश विद्यमान है। ऐसे कण कण में व्याप्त परमात्मा को घृत से युक्त बाती का प्रकाश क्या प्रकाशित करेगा।

ज्योति स्वरुप परमात्मा की आरती सारी प्रकृति कर रही है। प्रकृति का एक एक उपकरण उसकी आरती कर रहा है। गगन जैसा थाल हैं उसमें चन्द्रमा और सूरज के समान दीपक है। मलयागिरि पर्वत से आने वाली वायु सुगन्धित धूप है और पवन रुपी चंवर ढुलाया जा रहा है। उस परमात्मा की आरती साधारण मानव क्या उतार सकता है। यदि मनुष्य आरती उतारना ही चाहता है तो अपने मन को दीपक बनाए कर्मो की बाती बनाए और नाम रुपी घी से उसे प्रज्जवलित करे। इस प्रकार उसके प्रारब्ध में प्राप्त हुए कर्मी का क्षय होगा और अन्तंमन की ज्योति प्रज्जवलित होगी। जितना नाम रुपी घी इसमें डालेगें उतना ही इसका प्रकाश बढ़ेगा और मनुष्य ईश्वर के निकट होता जाएगा।

जैसे जैसे मनुष्य ईश्वरोन्मुख होता हैं उसे बाहरी पूजा विधि निरर्थक प्रतीत होने लगती है। वह सोचने लगता है कि जिस परमात्मा का प्रकाश कण कण में और दिन रात बरस रहा है उसके सामने घी से युक्त बाती का कोई महत्व साधक को प्रतीत नही होता है। ऐसी स्थिति में साधक वाह्य उपकरणों को छोड़कर अन्तर्मन की ज्योति से ही अपने ज्योति स्वरुप परमात्मा की आरती उतारना आरम्भ कर देता है।

जगत को राम मय कैसे देखें ?

"सिया राम मय सब जग जानी
करहु प्रणाम जोरि जुग पानी"
(रामायण)

अर्थात्–समस्त संसार सियाराम 'श्रीराम' मय है यानी सभी स्थानों पर जलचर नभचर थलचर सबके साथ राम है। 'मय' का अर्थ होता है 'साथ' या 'सहित'।

सारांश हर जगह हर क्षण हर पल हर रुप के साथ हर वस्तु के साथ 'मय' (आत्मा) अपने राम को देखती है। वह (Third Person) स्वयं राम नही बल्कि राम के साथ है।

अब आप कहेंगी कि हमारे गुरु जी कहते है सब को राम रुप समझो चाहे वह आप का कितना भी निन्दक हो, दुराचारी हो, दुष्ट हो, विरोधी हो, राम समझ कर उसे प्रणाम या राम राम कहो क्योंकि उसमें मेरा राम बैठा है। किन्तु उसके गलत आचरण, बुरे कर्मो वश उसके स्वरुप में हमें राम नज़र नहीं आता–उसके कर्मों के अनुसार ही उसका स्वरुप दीखता है। अतः उसे नमन नही करते बात करने का भी दिल नही करता है।

किन्तु उपरोक्त पक्तियों पर आ जाईऐ कि 'सिया राम मय' अर्थात् हम उस व्यक्ति को नहीं वरन् उसके साथ

अपने 'राम' को जो सदा सर्वदा सब जगह सभी के साथ रहता है, अपने हर आकार में दर्शन देता है, उसे राम राम या नमस्कार करते हैं अर्थात् वह स्वयं राम नही 'राम' उसके साथ है, राम के बिना उसका कोई अस्तित्व है ही नहीं। राम के बिना तो वह राम का उल्टा 'मरा' के समान मृतक है। केवल राम ही सत्य है शेष सब नाशवान या निर्जीव है।

यह राम ही तो है जो चलता है, हंसता है बोलता है समस्त कार्य करता है यदि राम न रहे तो व्यक्ति विशेष निर्जीव है।

और ऐसे राम को हम भूल जाते हैं—केवल व्यक्ति विशेष को स्मरण करते हैं जब कि राम को स्मरण करना है, उसके प्यारे नाम के द्वारा।

अत: हम हर समय हर जगह चाहे पेड़ पौधे हो, चाहे पशु पक्षी, चाहे व्यक्ति उसे नेत्र झुका कर नमन करते हैं—मन ही मन अपने राम की अभ्यर्थना करते हैं। क्योंकि उस परम पिता परमेश्वर की जो सर्व व्यापक है, सर्व शक्ति मान है, सर्वान्तर्यामी है, सर्वभूतहितेरता है, जिसके सदके हमें संसार के सभी सुख प्राप्त हैं, उसे रता हर श्वास के द्वारा हर पल हर क्षण कोटिश: प्रणाम है। उस प्यारे प्रभु को नमन करने के लिए तो असंख्य जन्म

लेकर भी हर पल प्रणाम करें अनेको जिह्वाओं से उसका गुणगान करें तब भी कम है। अतः निरंतर बस उसका नाम जपते जाना है–सभी में उसका दर्शन करना है, सभी कार्य उसके नाम के साथ ही करने है तभी जगत को भी 'राम मय' देख सकते हैं। नाम के बिना जीवन व्यर्थ है, कार्य कलाप व्यर्थ है, श्वास व्यर्थ है यानी जीवित होते हुए भी मृतक के समान है।

गुरुवाणी में कहा है–

मिल मेरे गोविन्द अपना नाम देउ
नाम बिना जो पहिरे खावै
ज्यों कूकूर झूठन पर जावै
नाम बिना जो करे रस भोग
सुख सुपने नहिं तन में रोग ॥

यानि इस जगत को नाम के साथ जोड़ देना है, तभी यह राम मय अनुभव होगा।

"श्रीराम"

श्रवण, मनन, निध्यासन

श्रवण– इस मनुष्य जन्म को सार्थक बनाने के लिए तथा राम मय बनाने के लिए तीन साधन बहुत जरुरी है पहला सन्तों से प्रभु की महिमा सुनना और नित्य प्रति का नियम रखना जैसा कि गुरु साहब कहते हैं कि अगर 'रंग तमाशा पूर्ण आशा चाहिए तो भोजन कीरतन नीत' नित्य प्रति कीरतन रुपी भोजन इस शरीर तथा मन दोनों को दो। नेम से प्रेम बढ़ता है तथा प्रेम से नेम बढ़ता है इसलिए सतसंग में जाने का नियम दृढ़ रखना चाहिए परन्तु सोच विचार कर सतसंग भी कैसा हो जहाँ केवल नाम की चर्चा हो दूसरा कोई भी विषय न हो।

सतसंगत ऐसी जाणीए,
जिथे एको नाम बखाणीए।

(गुरुवाणी)

पानी पीजो छान के
गुरु कीजो जान के

मनन–दूसरी अवस्था है मानना जो सतसंग में सुना उसको (Practical) भी करना इसे मनन कहा गया है

जैसे एक दिन हमने वहाँ से सुना कि–

जे जन सब की निन्दा करही,
ते चमगादड़ होय अवतरही।

(रामायण)

घर आकर निन्दा आदि वाली बातों से अपने आपको रोक कर रखना, समय को व्यर्थ बातों से बचा कर रखना अगर कोई ऐसी निन्दा सुनाने लग भी जाए तो उसे दूसरी ओर ले जाने का प्रयत्न करना।

कई बार सुन कर आते हैं–

काम क्रोध लोभ मद माया,
छूटहिं सभी राम की दाया।

(रामाग्रण)

इसी प्रकार अगर घर आकर इन पाँचो में से कोई आ भी जाए तो कर कृपा के मंत्र द्वारा इन्हे इसे दूर रखना क्योंकि वहाँ ऐसा सुना था कि अगर राम जी की कृपा हो तो यह छूट जाती है इसलिए हमने कृपा माँगनी है और क्रोध उकसाने वाली वृत्ति को शान्त रखना है। इस प्रकार रोज मनन का अभ्यास भी रखना है।

मने की गत कहीं न जाये,
जे को कहे पीछे पछताये।

(गुरुवाणी)

निध्यासन–क्रियान्वित रुप में (Practical) करते हुए अपने जीवन को वैसे ही चलाते रहना निध्यासन कहा जाता है कोई भी विरोधाभास आते भी अपने पथ से न डिग जाना। उदाहरण के लिए जैसे हमने रोज़ ५ माला कर कृपा की, १० माला श्रीराम की करने का व्रत लिया है परन्तु ऐसे करते करते घर में कोई विपत्ति आ जाती है तो उसे तोड़ना नही है। क्योंकि विपत्ति तो अपने ही कर्मों का 'कर्मभोग' बन कर परिणाम सामने आया है। नाम जप करते जाना है।

शब्द

आउ जी तुम आउ हमारे,
हरि जस स्रवन सुनावना ।

आउ जी...........

तुध आवत मेरा मन तन हरिआ,
हरि जस तुम संग गावना ।

आउ जी...........

संत कृपा ते हिरदै वासै,
दूजा आउ मिटावना ।

आउ जी...........

भगति दया दे बुधि परगासे,
दुरमति दुख तजावना ।

आउ जी...........

दरसन भेंटत होत पुनीता,
पुनरपि गरभ न पावना ।

आउ जी...........

नउ निधि रिधि सिधि पाई,
जो तुमरे मन भावना ।

आउ जी...........

संत बिना मैं थाउ न कोई,
अवरु न सूझै जावना ।

आउ जी...........

मोहि निरगुन को कोई न राखै,
संता संग समावना ।

आउ जी...........

कह नानक गुरु चलत दिखाया,
मन मधे हरि हरि रावना ।

आउ जी...........

"श्रीराम"

व्याख्या (आउ जी)

प्रकृति का नियम है जिस को जो रस अच्छा लगता है वह वही रस चाहता है, जैसे शराब पीने वाला शराबी का ही साथ चाहता है ऐसे ही और भी । परन्तु जिस पर मेरे प्रभु की कृपा हो जाती है वह चाहता है केवल हरि यश सुनाने वाले या सुनने वाले ही मिलें क्योंकि जब हम संतों से संपर्क रखेंगे तो वह सदा हमें हरि गुण ही सुनायेंगे जिससे हमारे मन के विषय विकार सब नष्ट हो जायेंगे और शीतलता आएगी । संतों की कृपा बनी रही तो दुरमति अपने आप समाप्त होती चली जाएगी । दुरमति अर्थात् द्वेष वाली मति ही सब दुखों का कारण है । अहम् का भाव आना ईश्वर की सत्ता न मानना । अपने आप को ही सर्वस्व मानना यही दुखों का कारण है । परन्तु जो हरि गुण गाते गाते प्रभु के मन को भा जाता है नऊनिधियाँ अठारह सिद्धियां उस के आगे पीछे घूमती है । हे मेरे प्यारे रामजी सदा हमें संतों का संग ही देना । मेरी बुद्धि ऐसी बना देना कि इसे संसारियों का संग अच्छा ही न लगे क्योंकि संतों से युक्ति मिलेगी कि कैसे इस मन में केवल राम नाम ही धारण करना है ।

शब्द

मेरे मीत गुरुदेव,
मो को राम नाम परगास ।
गुरुमति नाम मेरा प्राण सखाई,
हरि कीरत हमरी रहरास । मेरे मीत..........

हरि के जन सतगुरु सतपुरखा,
हउ विनय करु गुरु पास ।
हम कीरे किरम सतगुरु सरणाई,
कर दया नाम परगास । मेरे मीत..........

हरि के जन वड भाग वडेरे,
जिन हरि हरि श्रद्धा हरि पिआस ।
हरि हरि नाम मिले तृपतासिहि,
मिल संगत गुण परगास । मेरे मीत..........

जिन हरि हरि रस नाम न पाया,
ते भाग्य हीन जम पास ।
जे सतगुरु सरण संगत नहीं आए,
ध्रिग जीवे ध्रिग जीवास । मेरे मीत..........

जिन हरि जन सतगुरु संगत पाई,
तिन धुर मस्तक लिखिआ लिखास ।
धन धन सतसंत जित हरि रस पाया,
मिल नानक नाम परगास । मेरे मीत..........

"श्रीराम"

व्याख्या (मेरे मीत)

मीत तो वही है जो हमें सच्चा सुख प्रदान करे और सच्चा सुख केवल राम नाम के प्रगास में है। प्रकाश में ही हमारा मन प्रसन्न रहता है। जिसका मन केवल हरि भजन में या सतसंग आदि में प्रसन्न हो समझो उसे राम नाम का प्रकाश है क्योंकि वहाँ से उसकी मति अपनी न रहकर गुरु की हो जाएगी और उसे केवल ऐसा ही वातावरण रास (अच्छा) आएगा। बाकी वातावरण में निराशा सी लगेगी।

इसलिए पहले ऐसी स्थिति लाने के लिए प्रार्थना करनी पड़ेगी। हम तो इस माया के कीड़े हैं। अगर सतगुरु की कृपा हो जाये तो इन में राम नाम की लौ लग जाये तो यह फिर से ईश्वर का ही रुप बन सकते हैं। इस लिए शब्दों के Repeat करने से अपने आप प्रभाव पड़ता है और जीवन में परिवर्तन (Change) आने लगता है।

इन शब्दों से पता लगता है कि किसके भाग्य अच्छे हैं केवल संसारिक एश्वर्य प्राप्त करने वालों के भाग्य ही नही अच्छे उसके उपर और भी है।

जैसे कबीर जी ने अनुभव किया और कहा–
जो सुख प्रभु गोविन्द की सेवा,
सो सुख राज न लहिए।

पहले श्रद्धा तथा प्यास चाहिए फिर संगत मिलने से धीरे धीरे प्रकाश होने लग जाएगा।

चार प्रकार के जीव जग में आते हैं। एक अन्धेरे में आते हैं और अन्धेरे में ही चले जाते हैं वह संसार के खिलौनों में खेलते खेलते ही चले जाते हैं. एक प्रकाश में आते हैं अन्धेरा कर जाते हैं अर्थात पहले ज्ञान का प्रकाश होता है परन्तु यहा सतसंग आदि नही मिलता पहला भी खतम कर जाते हैं, तीसरे प्रकाश में आते हैं और प्रकाश में ही जाते हैं। क्रमशः और उस ज्ञान को आगे और बढ़ाते हैं और हरि धन के भंडार भर कर जाते हैं उन्हे नित्य प्रति सन्तों का संग भजन का प्रताप आदि मिलते हैं उनकी रुचि और इस तरह बढ़ती है, और चौथे वह है जो अन्धेरे में आते हैं परन्तु प्रकाश कर के जाते हैं पहले उनके पास कुछ नही होता परन्तु उन्हे किसी पूर्ण सतगुरु की शरण प्राप्त हो जाती है तो वह उन्हे सीधे मार्ग पर लगाने के लिए वाध्य कर देते हैं।

"भूले मार्ग जिन्ही बताया
ऐसा गुरु वडभागी पाया"

इसी आशय को सामने रखते हुए कहते हैं कि पीछे थोड़ा था हमारे कर्मो में अब सतसंग के द्वारा अभ्यास के द्वारा तड़प के द्वारा इसे बढ़ा लिया और अन्तर प्रगास कर लिया अब तो आनन्द ही आनन्द है।

"श्रीराम"

शब्द

मेरे मन प्रेम लगिओ हरि तीर।
हमरी वेदन प्रभु ही जाने,
मेरे मन अन्तर की पीर।

मेरे मन.........

हरि दर्शन को मेरा मन बहु तपतै,
जिउ तृखावंत बिन नीर।

मेरे मन.........

मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै,
सो भाई सो मेरा बीर।

मेरे मन.........

मिल मिल सखी गुण कहु मेरे प्रभु के,
ले सतगुरु की मति धीर।

मेरे मन.........

जन 'नानक' की हरि आस पुजावहु,
हरि दर्शन शांति शरीर।

मेरे मन.........

व्याख्या (प्रेम लगिओ हरि तीर)

संसारी जीवो में विषयों का बिष रहता है और उस में वह दिन रात दुखी रहते हैं। तृष्णाएं खतम नही होती क्रोध तथा अहम् तो जीव का सत्यानाश ही कर देते हैं। इन सबको दूर करने के लिए अन्तर में किसी विशेष औषधि की आवश्यकता है।

वह है हरि व गुरु चरणों में प्रेम उसी प्रेम का वर्णन है। गुरु साहब कहते हैं मेरे मन में हरि प्रभु का प्रेम इतना तेजी से बढ़ता जा रहा है कि मैं अब उसके बिना नही रह सकता। जैसे प्यासा पानी के बिना नही रह सकता वैसे ही जो कोई मुझे हरि गुण सुनाता है वही मुझे प्यारा लगता है। आओ तो सब सखियां (आत्माये) मिल कर अपने प्रियतम के गुण गायें। सतगुरु की कृपा से मेरी मति (बुद्धि) अब ऐसी बन गई है कि मुझे शान्ति केवल उसी के भजन में, सिमरण में तथा उसकी सेवा में ही मिलती है। मुझे शीतलता केवल इसी में मिलती है। नही तो चैन नही आता यही वास्तविक भगत की अवस्था है, केवल माला फेर लेना या पूजा आदि करना ही प्रेम नही इसलिए मन को सदा विषयों के चिन्तन में ही न लगा रहने दो बीच बीच में थोड़ा हरि चिन्तन भी करो।

"आस अनित्य तिआगो तरगं
संत जना की धूरि मन मगं"

यह केवल नित्य प्रति के सतसंग से ही प्राप्त हो सकती है, हरि सिमरण करने से सारे दुख भी दूर हो जाते हैं, नाम सिमरण मथा सतसंग करते करते जब सहज अवस्था बन जाती है तो परमानन्द की प्राप्ति हो जाती है, इस प्रकार सिमरण की सहज अवस्था से अपने आप राखा (रक्षक) बन जाता है।

इसलिए हमें निरन्तर सतसंग के द्वारा नाम जप का अभ्यास करते करते ही यह चन्द दिन जीवन के जो हमें उधार मिले हैं व्यतीत करने चाहिएं फिर–

लोक सुखी परलोक सुहेले,
नानक हर प्रभु आपे मेले।

राम जी राम राम

"श्रीराम"

शब्द

गुरु पूरा मेरा गुरु पूरा।
राम नाम जप सदा सुहेले,
सगल बिनासै रोग कूरा।

गुरु पूरा...........

एक अराधहु साचा सोई,
जाकी सरनि सदा सुख होई।

गुरु पूरा...........

नीद सुहेली नाम की लागी भूख,
हरि सिमरत बिनसै सभ दूख।

गुरु पूरा...........

सहज आनन्द करो मेरे भाई,
गुरु पूरे सभ चिंत मिटाई।

गुरु पूरा...........

आठ पहर प्रभु का जप जाप,
"नानक" राखा होआ आप।

गुरु पूरा...........

"श्रीराम"

व्याख्या (गुरु पूरा)

जैसे किसी का पिता पूर्ण होता है तो वह चाहता है मेरा बेटा भी मेरे जैसा ही लायक हो, बुद्धिमान हो वह ऐसा प्रयत्न भी करता ही रहता है।

ठीक इसी प्रकार सतगुरु सारे वेदों शास्त्रों की छान बीन करके हमारे जैसे जीवो को हर समय समझाते हैं ए संसारी जीवो कहाँ चलते जा रहे हो केवल माया के आकर्षण की ओर न जाओ इसने अन्त में धोखा देना है। आओ तो तुम्हे बहुत आसान तरीका बता रहे हैं–

कि अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे अन्तर का सब कूड़ा (काम क्रोध लोभ मोह अहंकार निन्दा चुगली ईर्ष्या द्वेष पाखंड आदि) सब समाप्त हो जाए तो एक ही उपाय है। आप निरन्तर राम नाम का जप करो और उसे सदा साथी जानो। एक ही नाम एक ही ईष्ट देव रखो तथा उसी की शरण में रहो। आप सदा ही आनन्द अनुभव करेंगे।

जैसे शरीर के लिए नींद जरूरी है वैसे मन के लिए भी जरूरी है जब हमारा ध्यान हरि सिमरण में लग जाता है तो यह विषयों की ओर से सो जाता है इस प्रकार यह Fresh हो जाता है।

शब्द

गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिंद,
गुरु मेरा पारब्रह्म गुरु भगवंत।
गुरु मेरा देव अलख अभेव,
सरब पूज्य चरण गुरु सेव।
गुरु बिन अवर नहीं मैं थांउ,
अनदिन जांपउ गुरुगुरु नांउ।
गुरु मेरा ज्ञान गुरु रिदै ध्यान,
गुरु गोपाल पुरख भगवान।
गुरु की शरण रहउ कर जोरि,
गुरु बिना मैं नाहीं होर।
गुरु बोहिथ तारे भव पारि,
गुरु सेवा जम ते छुटकार।
अंधकार महि गुर मंत्र उजारा,
गुरु के संग सगल निसतारा।
गुरु पूरा पाईऐ वडभागी,
गुरु की सेवा दुख न लागी।
गुरु का शब्द न मेटे कोई,
गुरु नानक "नानक" हरि सोई।

"श्रीराम"

व्याख्या (गुरु मेरी पूजा)

इस शब्द में गुरु को परमात्मा से ऊँचा स्थान दिया गया है। व गुरु की महिमा का सुन्दर वर्णन है।

गुरु का अर्थ है—अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाना गुरु ने जन्मों से सोई हुई आत्मा को अपनी कृपा द्वारा जागृत कर दिया, ज्ञान के नेत्र खोल दिये मोह—माया के बन्धन से मुक्त कर दिया—अतः आत्मा कहती है कि अब गुरु ही मेरी पूजा है व गुरु ही पारब्रह्म परमेश्वर है। देवों का देव भी गुरु ही है गुरु के बिना मेरे लिए अब कोई भी ठिकाना नही है।

मैं हृदय में भी गुरु का ध्यान करती हूँ। गुरु ही मेरा सर्वस्व है गुरु ने न जाने कितने पापियों को इस भव से पार किया। गुरु की सेवा से मेरे समस्त जन्मों के बन्धन कट गए। माया मोह के अनन्त विकारों को गुरु का मंत्र ही काट सकता है। गुरु का शब्द अडिग है। गुरु और पपमात्मा में कोई भी अन्तर नही है। प्यारे गुरु को बार बार नमस्कार है।

शब्द

हरि हरि तेरा नाम है दुख मेटण हारा,
गुरु सेवा ते पाई ऐ, गुरु मुख निसतारा।
हरि कीआ कथा कहाणिआ गुरु मीत सुनाया,
बलिहारी गुरु आपणे, गुरु को बलि जाईआ।

हरि हरि............

हरि के गुण हरि भावदे,
से गुरु ते पाए।
जिन गुरु का भाणा मनिआ,
तिन घुम घुम जाए।

हरि हरि............

जिन सतगुरु प्यारा देखिआ,
तिन को जाई हउ वारी।
जिन गुरु की कीती चाकरी,
तिन सद बलिहारी।

हरि हरि............

जो हरि हरि नाम धिआवंदे,
ते जन परवाना।
तिन विटहु नानक वारिआ,
सदा सदा कुरबाना।

हरि हरि............

"श्रीराम"

व्याख्या (हरि हरि तेरा नाम है)

हरि का अर्थ ही है हर लेना जो भी उसके प्रभु नाम का आश्रय लेता है उसका मन हर लेता है यह मन ही तो सारे दुखों का कारण है।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत।
जीता न जो मन योग है दूष्प्राप्य मत मेरा यही,
मन जीत कर जो यत्न करता प्राप्त कर लेता वही।
(गीता)

परन्तु यह हरि का नाम मिले कहां से ? जिससे सब दुख दूर हो जाए इसका अर्थ है–जो हमें इस मार्ग पर लगाये उसकी सेवा करें, उस पर बलिहारी जायें (अपने) संतों पर, सतगुरु पर अपना स्वंस्व वार दें तो भी थोड़ा है क्योंकि केवल संत व सतगुरु ही केवल अपने हैं।

हरि के गुण (अर्थात हरि का नाम मीठा लगे) यह सब गुरु की कृपा से ही हो सकता है और जिन्होने ऐसा मान लिया कि मेरा प्यारा प्रियतम सदा मेरे साथ है वह जो भी मेरे लऐ करता है अच्छा ही कर रहा है ऐसी बुद्धि बनाने वाले पर हम बलिहार जायें। जिन्होने अपना मन बुद्धि तथा चित हरि के चरणों में जोड़ लिया है। (प्रभु) जो सदा उसी में ही लीन रहते हैं संसार को उसकी तुलना कुछ भी नही समझते ऐसे प्रभु पर या सतगुरु पर बलिहार जाना पड़ेगा।

जो हर दम ध्यान करते हैं उन पर बलिहार जाना है उन पर कुरबान जाना है बस ऐसे ही अपने आप को भुलाते भुलाते हरि की याद में ही रहते रहते एक दिन हरि रुप हो जायेंगे जैसे मेरा साहब बे परवाह है।

तिस तिल न तमाई

ऐसे ही उसका दास जब हो जाएगा कि उसे उसके नाम के सिवा किसी चीज का भी तमा (इच्छा) नहीं रही तभी वह उसका रुप हो जाएगा और परमानंद को प्राप्त होगा।

"श्रीराम"

शब्द

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।
अन्तर्यामीं सो प्रभु पूरा,
दान देइ साधु की धूरा।

कर कृपा..........

जल थल महिअल रहिआ भरपूरे,
निकट वसै नाहीं प्रभु दूरे।

कर कृपा..........

जिसनो नदरि करे सो ध्यावै,
आठ पहर हरि के गुण गावै।

कर कृपा..........

जिऊ जंत सगले प्रतिपारे,
सरनि परिओ 'नानक' हरि दुआरे।

कर कृपा..........

"श्रीराम"

व्याख्या (कर कृपा प्रभु दीन दयाला)

अपने ईष्ट देव से सदा कृपा माँगनी चाहिए हे प्रभो ! कृपा करो मुझे केवल तेरा ही आश्रय है कई लोग कहते हैं क्यो कृपा मागें? उसकी तो कृपा ही ठीक है उसकी कृपा है जो उसने हमें मनुष्य जन्म दिया अच्छा वंश दिया संसारिक ऐश्वर्य पदार्थ दिए परन्तु एक और विशेष कृपा भी चहिए।

(१) पहली कृपा संतों की चरण रज भी मिले अर्थात संतों का संग भी मिले।

(२) मुझे हर समय मेरा प्यारा प्रीतम अपने अंग संग दिखे या अनुभव हो।

(३) जिस पर आप की कृपा बनी रहे वह ही आप को हर पल याद कर सकता है।

(४) आप ही सब जीवों की प्रतिपालना करते हैं मैं सदा आप की ही शरण में पड़ा रहूँ यही इच्छा है।

राम जी राम राम

'श्रीराम'

शब्द

जो सुख प्रभु गोबिंद की सेवा,
सो सुख राज न लहिये ।
हमरा धन माधो गोबिंद धरणीधर,
इहै सार धन कहिये जो सुख..........
अगनि न दहै पवन नहिं मगनै,
तसकर नेरु न आवै । जो सुख..........
राम नाम धन कर सचउनी,
सो धन कतहु न जावै । जो सुख..........
इस धन कारण सिव सनकादिक,
खोजत भए उदासी । जो सुख..........
मन मुकुन्द जिह्वा नारायण,
परै न जम की फांसी । जो सुख..........
निज घन ग्यान भगति गुरु दीनो,
तासु सुमति मन लागा । जो सुख..........
जलत अंबि थंभि मन धावत,
भरम बंधन भउ भागा । जो सुख..........
कहै कबीर मदन के मांते,
हिरदै देख विचारी । जो सुख..........
तुम घर लाख कोटि अस्व हस्ती,
हम घर एक मुरारी । जो सुख..........

व्याख्या (जो सुख प्रभु गोबिंद की सेवा)

जो आनन्द हरि भजन में या नाम ध्यान में है वह आनन्द तो संसार के राज्य में भी नही है।

'सगल सृष्टि का राजा दुखिया
हरि का नाम जपत होय सुखिया'
'जो जो दीसे सो सो रोगी
रोग रहित मेरा सतगुरु योगी'

अगर हम सच्चा धन राम नाम को समझें और इसे लेने का दृढ़ संकल्प कर लें तो कुछ समय नाम रुपी औषधि लेने के बाद यह अवस्था आएगी कि हमें उसमें आनन्द है संसार के क्षण भंगुर विषयो में नही है। और यह धन तो ऐसा है कि इसे न तो चोर चुरा सकता है न भाई छीन सकता है न इसे आग जला सकती है न इसे पवन उड़ा सकती है। उदाहरण के लिए हमें सतगुरु ने मंत्र दे दिया श्रीराम या 'कर कृपा प्रभु दीन दयाला तेरी ओट पूर्ण गोपाला' इसे अगर हम निरंतर अपने मन में जप करते रहते हैं तो इसे कौन देख सकता है या कौन ले सकता है।

ज्यों ज्यों हम इस मंत्र को अन्दर Repaet करेंगे उतना उतना यह हमारे अन्दर इक्ठ्ठा होता जाएगा। जिसका परिणाम शान्ति आनन्द तथा संतोष होगा। परन्तु इसके

लिए पहले अभ्यास की आवश्यकता है। इसीलिए शिव सनकादिक आदि संसार से परे हो गए और उदासीयां भी ली क्योंकि अभ्यास के द्वारा अगर एक बार हमारी जीह्वा पर Continuous उसी का नाम रहने लगा तो मन में भी यही रहेगा तो हमें जम आदि का डर नहीं।

जैसी जैसी वासना में जीव जाता है,
उसी उसी में शरीर को प्राप्त कर लेता है।

'गीता'

परन्तु ऐसा शौक कौन पैदा करेगा? हम संसारियो को देखते हैं तो उन जैसे शौक पैदा हो जाते हैं अगर सतगुरु की शरण में जायेंगे उन्हे सदा प्रसन्न मुद्रा में देखेंगे तो हमें भी ऐसा शौक उत्पन्न होगा और नित्य निरंतर उनकी सेवा तथा सतसंग में दृढ़ रहेंगे तो वह अपनी कमाई में से कुछ कमाई हमें देंगे। हमें सुमति प्रदान करेंगे ताकि हमारी बुद्धि उधर भगवत् नाम में लग जाएगी। जैसे जलते हुए को शीतलता मिल जाती है ऐसे ही दुरमति से जब सुमति बन जाएगी तो सारे बन्धन तथा भ्रम आदि अपने आप भाग जायेंगे।

कबीर जी संसारियों को चेतावनी देते हुए कह रहे हैं– ऐ लोगों जैसे आप को संसारी वस्तुओं पर मान है। मुझे अपने गोबिंद, राम, वाहिगुरु पर इतना मान है कि वह ऐसा आनन्द देता है जितना आप लोगों को संसार के सारे साधन नही दे सकते।

इसलिए हमें भी ऐसा धन एकत्र करने का अभ्यास करना चाहिए जो नियमित सतसंग से ही प्राप्त हो सकता है।

'श्रीराम'

शब्द

ठाकुर तुझ बिन आहिन मोरा
मात पिता भाई सुत बंधुप,
तिन का बल है थोरा।
ठाकुर..........

अनिक रंग माया के पेखे,
साथ न चालै भोरा।
ठाकुर..........

मोहि अनाथ निर्गुण गुण नाहीं,
आइओ तुम्हारे धोरा।
ठाकुर..........

बलि, बलि, बलि, बलि, चरण तुम्हारे,
इहा उहा तुम्हारो जोरा।
ठाकुर..........

साध संग नानक दास पाओ,
विनिसिओ सगल निहोरा।
ठाकुर..........

"श्रीराम"

व्याख्या (तुझ बिन आहि न मोरा)

अपमे ठाकुर को साक्षात सामने देखते हुए उनसे बात कर रहे हैं : ऐ मेरे ठाकुर जी ऐ मेरे सतगुरु जी ! मेरा तेरे बिना और कोई नही है, क्योंकि आप तो आदि में भी थे मध्य मे भी हैं और अन्त मे भी होगें।

"आदि मध्य जो अन्त निभाए
सो साजन मेरे मन भाए"

यह जो संसार में देख रहा हूं जिसमें मुझे सब रिश्ते झूठे भासित हो रहे हैं। जैसे माता पिता भाई पुत्र और दूर के रिश्ते आदि यह सब हैं तो सही पर इनका बल थोड़ा है। यह तो आपही नाशवान हैं। मुझे क्या बल दे सकते हैं। यह सब क्षण भंगुर हैं। इनको अपना ही नही पता कब श्वासों को छोड़ देना है और यह तो आपही सब दुखी रहते हैं, मुझे क्या सुख देगें। दूसरों को सुख वही दे सकता है जो आप स्वंय बहुत सुखी हो इस लिए मुझे तो आपका बल चाहिए जैसे हनुमान जी रावण से कहा :—

जा के बल लवलेश ते
जितेहु चराचर झार
तासू दूत में जा करि
हरि अनेहु प्रिय नारि।

कितना अपने राम जी के बल पर विश्वास है।
भरत जी ने कहा –

अप अभिमान जाहि जनि भोरे,
मैं सेवक रघुपति पति मोरे।

जितने भी माया के रंग देख रहे हैं यह सब परछाई मात्र है। इनमें से साथ जने वाला एक किनका भी नही है मेरे में तो कोई भी गुण नही है। मेरे प्यारे प्रियतम परन्तु तुम्हारे द्वार पर तो आ गया हूं। आप की शरण आने से सदा ही आप पर बलिहार जाता हूँ क्योंकि मुझे तो यहाँ भी और आगे भी आप का ही बल है।

"जा मात पिता सुत मीत न भाई
मन वहां नाम तेरे संग सहाई"

यह बल कहां से प्राप्त किया? जब मैंने संतो का संग पाया और हरि यश गाया तो सब प्रकार का लोक पतिआरा छूट गया। राम जी का आसरा लेकर बाकी किसी भी आश्रय की जरुरत नही रहीं।

रामजी राम राम

"श्रीराम"

शब्द

साधो रचना राम बनाई ।
इक बिनसै इक असीथर मानै,
अचरज लीखओ न जाई ।
साधो...........

काम क्रोध मोह बस प्रानी,
हरि मूरति बिसराई ।
साधो...........

झूठा तन साचा कर मानिओ,
जिउ सपना रैनाई ।
साधो...........

जो ही सै सो सगल बिनासै,
जिउ बाहर की छाई ।
साधो...........

जन नानक जग जानिओ मिथिआ,
रहिओ राम सरनाई ।
साधो...........

'श्रीराम'

व्याख्या (रचना राम बनाई)

सारा संसार मेरे प्यारे ने माया के द्वारा रचा है। ऐसी मोहिनी माया डाली है कि हम देखते हैं हमारे सामने सभी चलते जा रहे हैं परन्तु जब उनको जलाकर या दबाकर घर आते हैं तो फिर से मेरी तेरी मोह माया में फंस जाते हैं यही तो माया प्रभाव है गीता में भी भगवान नें कहा है :—

"यह त्रिगुण देवी घोर माया
अगम और अपार है।
आता शरण मेरी वही,
जाता सहज में पार है"

जो जीव सदैव उस परम पिता परमात्मा की शरण में आ जाता है वही इस माया से परे हो सकता है।

नही तो सब संसारी जीव इन पांचो विकारों में ही फंसे रहते है कभी क्रोध पर वश नही चलता कभी इच्छाएं तंग करती है कभी हऊमैं (अहं) आ जाती है परन्तु संत जन हमेशा हम सोये हुए जीवो को जगाते रहते हैं और साथ साथ दवाई भी बताते रहते है कहते हैं यह सब जो देख रहे हो यह सब सपना मात्र है इसी में न फँसे रहना रात को कोई राजा भिखारी बन जाता है तो सवेरे उठते

ही वह सोचता है मैंने क्या देखा ? इसी प्रकार जब हम ज्ञान का नेत्र खोलते है तो हमें लगता है यह सब तो सपना मात्र ही था ।

परन्तु यह नेत्र बड़ी कृपा से अभ्यास से, नित्य प्रति के सतसंग से ही खुल सकते है। जब सतगुरु की कृपा हो जाती है तो यह जीव सब मिथ्या जान कर सदा हरि के ध्यान में ही समाहित रहता है उसे संसार की झूठी बातें निन्दा चुगली मेरी तेरी यह नहीं अच्छी लगती सदा श्रीराम नाम जप करने में ही व्यस्त रहता है उसके संसारिक काम तो आप ही सारे प्रभु आकर कर जाते हैं ।

इसलिए नित्य प्रति गुरु वाणी पढ़ना सुनना तथा मनन करना चाहिए और इस संसार में रह कर भी अपने आप को अलग रखने का अभ्यास करते रहना चाहिए और कृपा माँगनी चाहिए जैसे कि गीता में कृष्ण जी हमें समझाते हैं :—

करता रहे सब कर्म भी,
मेरा सदा आश्रय धरे ।
मेरी कृपा से प्राप्त वह,
अव्यय सनातन पद करें।

अर्थात सब कर्म करते हुए भी सदा प्रभु की कृपा की याचना करते रहना और कर्ता धर्ता उसी को मानना हऊमै (अहं) समाप्त कर देना इसी से मोक्ष हो सकता है ।

"श्रीराम"

शब्द

श्री राम नाम उचार मना,
आगे जम दल बिखम घना
अवरि पंच हम एक जना
किउ राखहु घर बार मना।

श्री राम..........

मारहि लूटहि नीता नीत,
किस आगे करी पुकार जना।

श्री राम..........

उसारि मड़ोली राखै दुआरा,
भीतर बैठी साधना।
अमृत केल करे कामणी
अवरि लुटेनि सु पंच जना।

श्री राम..........

ढाहि मडोली लूटिआ दहुरा,
साधन पकड़ी एक जना।
जम डंडा गलि संगल पड़िआ,
भाग गए से पंच जना।

श्री राम..........

व्याख्या (श्री राम नाम उचार मना)

कामण लोड़े सुइना रुपा,

मित्र लुड़ेन सू खाधाता।

'नानक' पाप करे तिन कारण,

जासी जमपुर बाधाता।

यह भी चेतावनी है। इस सोये हुए जीव को महाराज इतनी Consession दे रहे हैं कि ऐ कलयुग के जीवो आप से समाधियां योग आदि अगर नही भी हो सकते तो आसान काम तो हो सकता है। वह क्या है ? 'श्री राम' नाम का उच्चारण ही करते रहा करो क्योंकि जो आप उच्चारण करोगे वही आप का मन भी बोलेगा।

फिर यह अवस्था जो आगे वर्णन की गई है यह सब पर एक न एक दिन तो अवश्य आएगी। क्या ? जब इस माटी के बर्तन में से आत्मा भाग निकलेगी और इसको जला या दबा दिया जाएगा। अगर ऐसी अवस्था आने से पहले ही अगर यह जीव जाग जाए तो धन्यभाग है इसको इसीलिए सतगुरु महाराज जगाते हैं कि यह संसारी लोग तथा पांच विकार तेरे को लूट रहे हैं। नित्य प्रति तेरी शक्ति क्षीण होती जा रही है। किसी को भी पूछो क्या

हो गया ? इतने Week (दुर्बल) हो गए हो। जवाब आता है क्या करें ? इस चिन्ता ने हमें खा डाला है। भाई किस की चिन्ता ? "यह संसारियों की चिन्ता" जवाब आता है। अगर भगवत् नाम की चिन्ता करोगे तो यह चिन्ताएं नहीं आएगीं।

इसलिए इस आत्मा रुपी श्री को नाम रुपी अमृत पिलाओ तो यह सदा के लिए अमर हो जाएगी।

"श्रीराम"

शब्द

तुम्ह करहु दया मेरे सांई।
ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर,
सदा सदा तुध धिम्राई।
पानी परवा पीसउ संत म्रागै,
गुण गोबिंद जस गाई। तुम्ह करहु..........
सास सास मन नाम सम्हारे,
इह विश्राम निधि पाई। तुम्ह करहु..........
तुम्हरी कृपा ते मोह मान छूटे,
बिनसि जाइ भरमाई।
म्रानद रुप रविम्रो सभ मधे,
जत कत पेखउ जाई। तुम्ह करहु..........
तुम दयाल कृपाल कृपा निधि,
पतित पावन गोसाई।
कोटि सुख म्रानन्द राज पाए,
मुख ते निमख बोलाई। तुम्ह करहु..........
जाप ताप भगति सा पूरी,
जो प्रभु के मन भाई।
नाम जपत तृसना सब बुझिहै,
नानक तृपति म्रघाई। तुम्ह करहु..........

"श्रीराम"

व्याख्या (करो दया मेरे साँई)

ऐसा अक्सर कहा जाता है

बिनाश काले विपरीत बुद्धि

अर्थात जब समय भयानक आना होता है उस समय यह बुद्धि नष्ट हो जाती है। इसी लिए वेदों में भी ऐसी बुद्धि की मांग की गई है जो सदैव प्रभु की ओर ही प्रेरित हो। गायत्री मंत्र में भी इसी पर जोर दिया गया है।

"भर्गोदेवस्य धी महि"

अर्थात हमारी बुद्धियों को अपनी ओर प्रेरित करो इस बुद्धि में कोई विकार या संसारी तरंगें न आने पाये वह सदा हरि चिन्तन में रहे। क्योंकि जो जो घड़ी हमारी राम नाम सिमरन में लगती है वही सफल है। शेष सब असफल है। अगर ऐसी बुद्धि बन जाये तो हमारा मन सदैव हरि चिन्तन ही लागेगा क्योंकि बुद्धि ही मन को विचलित कर देती है।

इसीलिए इस शब्द में बार बार यही प्रार्थना की गई है कि हमें भी ऐसी दुद्धि दो जो सदा सदा अपने राम को ही ध्याऐ परन्तु ऐसी बुद्धि प्राप्त करने के लिए कुछ तो करना पड़ेगा। वह क्या ? संतों की सेवा करनी पड़ेगी, पानी भरना, पंखा करना यह तो शारीरिक सेवा है और आत्मिक सेवा जब हमें किसी की याद आती है तो हमारी आंखों में आंसू आ जाते हैं, क्या कभी हम संतों,

महपुरुषों की, ईष्ट देव सतगुरु की याद में भी रोये ? यह है पानी भरना। पंखा करना क्या है ? अपने मन को सदैव हर परिस्थिति में शीतल रखने का स्वभाव बनाने की चेष्टा करना यही है पंखा करना।

जब हम रोज रोज सतसंग करेगें तो हमारे मन को कहां विश्राम मिलेगा ? केवल अपने प्यारे के दर्शन में या उसके नाम में, यही है सदा सदा ध्यान होना।

नित्य प्रति हमें कृपा मांगनी है क्योंकि जब कृपा होगी तो हमारा मोह तथा मान समाप्त हो जाएगा और सारे भ्रम भी समाप्त हो जायेगें।

हमारा मोह तथा हऊमैं ही हमारे में भेद भाव पैदा करते है। इसलिए गुरु कृपा से जब भेद भाव खतम हो जायेंगें तो हमें सब में उसी की छबि दिखेगी। जैसे कि संत तुलसी दास जी ने अनुभव किया और कह ही डाला—

"सिया राम मय सब जग जानी
करहु प्रणाम जोरि जुग पाणी"

उसी भाव को सतगुरु प्रगट कर रहे हैं जहाँ भी देखुँ बस तू ही तू नजर आता है। आनन्द ही आनन्द है।

क्योंकि इस पतित को भगवान ने अपनी कृपा से पावन कर दिया। गंगा पावन है। जो भी गन्दी चीज़ भी इस में जाती है वह पावन हो जाती है।

'श्रीराम'

शब्द

असां तेरी मेहर नाल तरना जी,
मेहर करो ।
मेहर करो मेहरा दे साइआ,
कट देओ जनम मरण दी फांइआ,
असी बहुड़ जनम नहीं आवां जी ।

असां तेरी......

तेरा कीता जातो नहीं
मैनूं जोग कि तोई ।

असां तेरी......

निरगुण आरे कोइ गुण नाहीं,
आपे तरस पयोई ।

असां तेरी......

तरस पया मैं रहमत होइ,
सतगुरु साजन मिलिआ जी ।

असां तेरी......

"नानक" नाम मिले तो जीवां,
तन मन धीवें हरिआ जी ।

असां तेरी......

"श्रीराम"

व्याख्या (असां तेरी मेहर नाल)

हे प्रभु ! दया के सागर ! दया करो !
तेरी कृपा हो गई तो इस संसार सागर से मैं तर जाऊँगा .

ऐसी कृपा करो दया विधान कि यह आवागमन का चक्कर दूर हो जावे व पुन: जनम लेकर इस असार संसार में न आना पड़े । न जाने फिर मनुष्य शरीर मिले या नहीं क्योंकि यह जो तुमने कृपा करके मुझे दुर्लभ मनुष्य शरीर दिया है। इसका मूल्य मैंने जाना नहीं फिर भी तुमने मुझ पर कृपा की है ।

मुझ में कोई भी ती गुण नहीं है आप ने तरस करके मुझे यह शरीर प्रदान किया है । और अब जब यह शरीर तुमने कृपा करके मुझे दे ही दिया तो इतनी आप की अटूट कृपा हुई कि मुझे सतगुरु प्यारा भी मिल गया जो कि मेरा साजन भी है, माता पिता, भाई बन्धु, परमेश्वर सभी कुछ है . अत: अब मुझ पर बस इतनी कृपा और करो कि तेरा नाम व दर्शन प्यारे सतगुरु के रुप में निरंतर मिलता रहे तभी इस जीवन की सार्थकता है जीवित रहने की सफलता है क्योंकि तेरा नाम सतसंग, कीर्तन, संतों का दर्शन मिलता है तो यह मन अलौकिक आनन्द से झूम उठता है प्रशन्नता से खिल उठता है रोम रोम प्रफुल्ल हो जाता है। अत: निरंतर अपना नाम व दर्शन देते रहने की कृपा करो प्रभु ।

'श्रीराम'

शब्द

अब अपने प्रीतम सिउ बन आई।
राजा राम रमत सुख पाइओ,
बरस मेघ सुखदाई।

अपने प्रीतम..........

इक पल बिसरत नहीं सुख सागर,
नाम नवै निधि पाई।

अपने प्रीतम..........

उदोस भयो पूर्ण भावी को,
भेंटे संत सहाई।

अपने प्रीतम..........

सुख उपजै दुख सगल बिनासै,
पार ब्रह्म लिव लाई।

अपने प्रीतम..........

तरिओ संसार कठिन भै सागर.
हरि नानक चरण धिआई।

अपने प्रीतम..........

"श्रीराम"

व्याख्या (अपने प्रीतम सिउ)

यह बड़ी ऊंची अवस्था है क्योंकि अब मेरी अपने प्रीतम प्यारेराम से बन गई है। निरंतर साधन अभ्यास सतसंग करने से मन ने मान लिया कि अब एक ही आश्रय हैं राजा राम जी का, यहाँ राम जी को राजा राम करके सम्बोधन किया है क्योंकि राजा हमेशा यही कामना करता है, प्रयत्न करता है कि मेरी प्रजा खुश रहे।

जैसे वर्षा के आने पर सब जगह शीतलता छा जाती है इसी प्रकार जब जीव राम में ही रमण करने लग जाता है तो वह शान्त चित तथा प्रसन्न चित रहता है। परन्तु कैसे रहता है जैसे जब तक पंखा चलता रहता है तब तक हम गर्मी महसूस नही करते जरा सा भी बन्द हुआ तो फिर गर्मी (Feel) होने लगी सतगुरु की कृपा से अब श्रीराम नाम निरंतर मन में चलता रहता है इक पल भी विसरता नही है क्योंकि अब यह अखुट खजाना सतगुरु से प्राप्त किया है उन्होने ऐसी कृपा की है कि दिल ही नही करता कि उसे भूल जाऊं, जैसे धनवान को अपने धन की चिन्ता रहती है कि कही मेरा समय व्यर्थ तो नही जा रहा है।

किसी भी कार्य करने के लिए अगर कोई सहायक मिल जये तो वह काम आसानी से हो जाता है ठीक इसी

प्रकार अब संत महापुरुष मेरे सहायक हो गये है वह प्रति दिन मुझे चेतावनी देते रहते हैं अरे मूर्ख जो काम करने आया है वह भी कर ले केवल संसार के खिलौनों में खेल कर ही अपना समय व्यर्थ न खोना नाम जप, धारणा, ध्यान, समाधि, श्रवण, मनन, निध्यासन भी करना इस प्रकार से तेरी किस्मत पलट जाएगी।

उनके ऐसे सद उपदेशों से तथा कृपा से जब नाम जप तथा अन्य साधन मिले तो दुख सारे खतम हो गये और सच्ची लगन अपने राम प्यारे से लग गई। बस अपना लक्ष्य केवल हरि के चरण अर्थात हरि का नाम ही रखा तो संसार रुपी सागर से तर गये, बस अब कोई बाधा नही, कोई दुख नही आनन्द ही आनन्द है है।

शब्द

किस नाल कीजै दोस्ती, सब जग चलनहार ।
कूड़ राजा कूड़ परजा, कूड़ सभ संसार,
कूड़ मंडप कूड़ माड़ी, कूड़ वैसणहार ।
किस नाल..........

कूड़ सुइना कूड़ रुपा, कूड़ पैन्हण हार,
कूड़ काइश्रा कूड़ कपड़, कूड़ रुप श्रपार ।
किस नाल..........

कूड़ मीश्रा कूड़ बीबी, खपि होए खार,
कूड़ कूड़े नेहु लगा, बिसरिश्रा करतार ।
किस नाल..........

कूड़ मिठा कूड़ माखिउ, कूड़ डोबे पूर,
'नानक' बखाणौ बीनती, तुध बाझ कूड़ो कूड़ ।
किस नाल..........

'श्रीराम'

व्याख्या (किस नाल कीजै दोस्ती)

संसार में अगर दोस्ती भी करुं तो किस से करुं सब कुछ तो चलने वाला ही दिखाई दे रहा है। राजा भी झूठ है और उसकी राजनीति भी तो सब अस्थायी है। आज कुरसी मिली कल छिन गई या उसकी चिन्ता में ही रहे कि कहीं छिन न जाए तो सुख कहाँ रहा ?

एक ही घर में कितने रहते है और चलते जाते है क्योंकि बैठने वाले सारे स्थिर नही है अस्थाई है। सोना चाँदी तो कूड़ है ही, क्योंकि माया तो चलने वाली है आज यहाँ है तो कल दूसरे के पास चली जाएगी। आज पिता धनवान है तो कल पुत्र आदि छीन लेते है तो यह सब अस्थिर जो हुए कपड़े पहनते पहनते अंग घिस गये परन्तु तृष्णा नही जाती । मीआ बीबी पति पत्नी सब एक दूसरे को छोड़ कर चले जाते है फिर भी माया इतनी प्रबल है कि कूड़ से ही हमारा नेह लगाती है और उस संत करतार को भुला देती है। परन्तु जिन संतों ने यह जान लिया कि सत्य ही परमात्मा है वह कहते हैं ऐ मेरे राम तेरे बिना सब झूठ ही झूठ है।

शब्द

राख सदा प्रभु अपने साथ ।
तू हमरो प्रीतम मन मोहन,
तुझ बिन जीवन सगल अकाथ ।

राख सदा..........

रंक ते राउ करत खिन भीतर,
प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ।

राख सदा..........

शीतल सुख पायो मन तृपते,
हरि सिमरत स्रभ सगले लाथ ।

राख सदा..........

निधि, निधान नानक हरि सेवा,
अवर सियानप सगल अकाथ ।

राख सदा..........

"श्रीराम"

व्याख्या (राख सदा प्रभु)

राम नाम की बहुत ही महिमा है हरि कहे या राम कहे मतलब तो सिमरण से है। वह हमारा प्रीतम भी है मन मोहन भी है इसलिए हम तो सदा उसी के साथ ही रहेंगे। जब अन्तर से वृति उस परम पिता परमात्मा से जुड़ गई तो ऐसे लगने लगा कि अब राम नाम के बिना सारा जीवन निष्फल है।

हर एक कर्म, प्रत्येक गति मिति सब उसके लिए ही हो रही है क्योंकि उसके बिन कुछ है ही नही, उसी के लिए खाना बनाया जाता है उसी को खिलाया जाता है उसी के लिए ही सब कार्य हो रहे हैं। वह कैसा है उसकी इच्छा हो तो राजा को फकीर बना दे और फकीर को राज पद दे दें आप कहेंगे राजा कैसे फकीर बन सकता है आज कोइ राजपद पर है परन्तु उसमें सिवाय राजनीति के कोई भी धर्म या ईश्वरीय ज्ञान नही है सदा संसार में ही लिप्त रहता है या उसकी भावना नही बदली किसी के मन में उसके प्रति घृणा आ जाती है वह उसे मार देता है अब अगले जन्म में वह राजा किसी गरीब के घर पैदा हो गया तो फकीर हो गया परन्तु जो निरंतर हरि सिमरण की आदत डाल लेते हैं उन्हे सदा शीतलता तथा आनन्द का अनुभव होता है सब दुखड़े खतम हो जाते हैं बस एक खजाना नाम धन को एकत्रित करना ही चतुरता है बाकी सब तो किसी भी काम के नही क्योंकि नष्ट जो होते जा रहे हैं।

शब्द

अन्तर राम राइ प्रकटे आइ,
गुरु कर किरपा दिओ रंग लाइ ।

चीत आवै तां महा अनंद,
चीत आवै तां सभ दुख भंज ।

चीत आवै तां सरधा पूर,
चीत आवै तां कबहि न झूर ।

चीत आवै तां सरब की राजा,
चीत आवै तां पूरे काजा ।

चीत आवै तां रंग गुलाल,
चीत आवै तां सदा निहाल ।

चीत आवै तां सद धनवंता,
चीत आवै तां सद निभरंता ।

चीत आवै तां सभ रंग माणौ,
चीत आवै तां चूको काणौ ।

चीत आवै तां सहज घर पाइआ,
चीत आवै तां सुनि समाइआ ।

चीत आवै सद कीरतन करता,
मन मानिआ नानक भगवंता ।

"श्रीराम"

व्याख्या (अन्तर राम राइ प्रगटेआइ)

सतगुरु की पूर्ण कृपा हो गई राजा राम अन्तर में ही प्रगट हो गये परन्तु उन्होने रंग कैसे लगाया रोज रोज जगा जगा कर, ए मना मेरे आ तूं सदा रहो हर नाले जैसे पक्का रंग करने के लिए हिलाया भी जाता है पकाया भी जाता है ठीक इसी प्रकार अगर नाम जपते जपते कोई कठिनाई भी आ गई तो उन्होने मुझे समझाया कि इस मार्ग पर चलने वाले को कई Present मिलते है 'गरीबी, अपमान तथा रोग' परन्तु घबराना नही "तेराभाणा मीठा लागे" कह कर नाम का विश्वास नही छोड़ना तभी तो वह अपनायेगें जब इस Stage से ऊपर उठे तो फिर यह अवस्था हो गई ।

जब चित में हर समय उसी का नाम है तो महा आनन्द प्राप्त है । शरीर को जहाँ मर्जी रखे जैसे भी रखे परन्तु अपना ध्यान न भुलाये यही विशेष कृपा है । क्योकि जब हमारा मन फजूल की बातों में जाता है तभी यह दुखी होता है Tension सारी कम करो और अपना चित्त उधर ऐकाग्र कर लो बस फिर कभी भी हम दुखी नही होंगे । बस एक बार चित तक अपने प्यारे राम जी का नाम Touch हो जायें, वह तो सर्व का राजा बन गया क्योंकि उसे अन्तर से कोई भी इच्छा नही रही वह अपने प्यारे की रजा में सदा आनन्द ही आनन्द मनाता है बस एक बार जो राम जी का हो गया या अपने वाहिगुरु का हो गया, वही शाहों का शाहंशाह बन गया ।

श्रद्धा अपने आप ही सारी पूरी हो गई क्योंकि, दुनिया वालों से श्रद्धा तो इसलिए बनती है जब इच्छाएं पूरी होती है परन्तु यहाँ तो इच्छाए ही नही रही बस एक ही इच्छा है तेरा नाम न भूल जाये तेरे दर्शन होते रहे ।

इसलिए सदा रंग में ही रगां रहता है उसे कोई भी कलेश नही आता ।

लांवा

हर पहलड़ी लांव पर विरती कर्म द्रड़ाइआ,
बलराम जीउ।
बाणी ब्रह्मा वेद धर्म द्रड़हु पाप तजाइआ,
बलराम जीउ।
धर्म द्रड़हु हर नाम धिआवहु
स्मृनि नाम द्रड़ाइआ।
सतगुरु गुरु पूरा आराधहु,
सब किल विख पाप गवाइआ।
सहज आनन्द होआ वडभागी,
मन हर हर मीठा लाइआ।
जन नानक कहे लाव पहली,
आरम्भ काज रचाइआ।
हरि दूजड़ी लांव सतगुरु पुरख मिलाइआ,
बलराम जीउ।
निरमल भै मन होइ हउ मै मेल गवाया,
बलराम जीउ।
निरमल भउ पाइआ हरि गुण गाइआ,
हरि वेखे राम हदूरे।
हरि आतम राम पसरिआ सुआमी
सरब रहिआ भरपूरे।
अंतर बाहर हरि प्रभु एको मिल,
हरि जन मंगल गाए।

जन नानक दूजी लाव चलाई,
अनहद शबद बजाए ।
हरि तीजड़ी लांव मनि चाव भइआ,
वैरागिआ बल राम जीउ ।
संत जना हरि मेल हरि पाइआ,
बड़ भागिआ बलराम जीउ ।
निरमल हरि पाइआ, हरि गुण गाइआ,
मुख बोली हरि वाणीं ।
संत जना वड़भागी पाइआ,
हरि कथिएं अकथ कहाणीं ।
हिरदै हरि हरि धुनि उपजी,
हरि जपिऐ मस्तक भाग जीउ ।
जन नानक बोले तीजी लावें,
हरि उपजै मन वैराग जीउ ।
हरि चउथड़ी लांव मन सहज भइआ,
हरि पाइआ बलिराम जीउ ।
गुरमुख मिलिआ सुभाउ हरिमन तन,
मीठा लाइआ बलराम जीउ ।
हरि मीठा लाया मेरे मन भाया,
अनदिन हरि लिव लाई ।
मन चिंदिआ फल पाइआ स्वामी,
हरि नाम बजी बधाई ।
हरि प्रभि ठाकुर काज रचाइआ,
धन हिरदै नाम बिगासी ।
जन 'नानक' बोले चउथी लावै,
हरि पाइआ प्रभु अविनासी । 'श्रीराम'

व्याख्या (लांवा की)

लांवा क्या है ? अपने प्रभु के साथ ऐकाकार होना उसके मस्ती भरे मधुर ध्यान में समाहित रहना, उसके नाम व ध्यान को क्षण मात्र भी विस्मृत न करना, केवल उनमें विलीन हो जाने, उनमें समा जाने की तड़प ही प्रभु से शादी अर्थात् प्रभु के साथ लांवा (फेरे) लेना है।

लांवा लेने की चार स्थितियां हैं। अर्थात् चार लांबा (फेरे) लेने के बाद आत्मा रुपी स्त्री अपने पति की सोहागणी पत्नी बन जाती है।

पहली लांवा—जीव की पहली अवस्था है राम नाम में रुचि होना यह कहाँ से प्राप्त होगी ? धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने से सुनने से और संतों के मुख से सुनने से, पहली अवस्था में हरि का नाम मीठा लगना और दृढ़ता रखना।

दूसरी अवस्था (लांवा)—जब ऐसी अवस्था होती है तो अपने आप जीव को सतगुरु मिल जाते हैं जो उसे रोज रोज याद करवा कर नाम में प्रीति प्रदान करते हैं और निरन्तर नाम अभ्यास से अहम् रोग धीरे धीरे नाश होने लगता है। फिर धीरे धीरे उसे अपना सर्ब व्यापी राम ही राम दृष्टिगोचर होता है और जब वह चुप बैठता है तो उसके अन्तर में भी राम नाम की आवाज आती रहती है जिसे अनहद शब्द कहा गया है।

तीसरी अवस्था (लांवा)--जब इस तरफ चाव बढ़ने लगा तो स्वतः ही वैराग्य भी आने लगा और वास्तविक वैराग्य वही है जो अपने आप हो जाये किसी कमी के कारण अगर हमारा मन उदास हो जाता है तो वह वैराग्य नही जैसा कि रामायण में कहा गया है :--

"नारि मुई गृह संपति नासी
मूंड मुडाये भये सन्यासी"

सब कुछ होते हुए भी मन केवल अपने प्रीतम प्यारे की याद में रहे संसार की मौज न चाहे यही वास्तविक वैराग्य है। यह अवस्था कैसे बनी ? सच्चे संतों के संग से।

चौथी अवस्था (लांवा)--जब मन की सहज अवस्था बन गई, बस अब मन केवल अपने प्यारे राम का नाम ही चाहता है क्योंकि वह मीठा लगने लगा है संसार के पदार्थ देखने में या शुरू में तो मीठे लगते हैं परन्तु इनका परिणाम विष है। अन्त में बड़ें बड़े भी हार जाते हैं जब कुरसी का मद, परिवार का मद सबका अन्त हो जाता है।

इसलिए निरन्तर सतसंग तथा नाम के अभ्यास से अन्तर में आनन्द की ध्वनि उपजने लगती है, हृदय में कमल खिल गया सदा आनन्द ही आनन्द है। ऊपर की कोई भी वस्तु का इस पर कोई भी प्रभाव नही। बस एक ही एक नजर आने लगा तो जीवन मुक्त हो गया, वो सुख इस जीह्वा से तो वर्णन ही नही किया जा सकता। अनुभव किया जा सकता है निरन्तर नाम जप से।

आनन्द साहिब जी

ग्रानन्द भइग्रा मेरी माए,
सतगुरु मैं पाइग्रा ।
सतगुरु त पाया सहज सेती,
मन बीजग्रा बधाईग्रा ।
राग रतन परिवार भरिग्रा,
सबद गावण ग्राइग्रा ।
शब्दो त गावहु हरि केरा,
मन जिनी वसाइग्रा ।
कहै नानक ग्रानन्द होग्रा,
सतगुरु मैं पाइग्रा ।
ए मना मेरिग्रा तू सदा रहो हरि नाले,
हरि नाल रह तू मन मेरे दुख सब विसारणा ।
ग्रंगीकार ग्रोह करे तेरा,
कारज सभ सवारणा ।
समना गला समरथ सुग्रामी,
सो किउ मनहु विसारे ।
कहै नानक मन मेरे सदा रहो हरि नाले,
साचे साहिबा क्या नही घर तेरे।
घर त तेरे सब किछु है,
जिस देहि सो पावए ।

सदा सिफत सलाह तेरी,
नाम मन वसावए ।
नाम जिनके मन वसिआ,
बाजै सबद घनेरे ।
कहै नानक साचे साहिब,
क्या नहीं घर तेरे ।
साचा नाम मेरा आधारो,
साच नाम आधार मेरा ।
जिन भुरवा सभ गवाइआ,
करि शान्त सुख मन आई वसिआ ।
जिन इछा सभ पुजाइआ,
सदा कुरवाण कीता गुर विटहु ।
जिस दीआ एह वडिआईआ,
कहै नानक सुणहु संतों सबदिधरहि प्यारो ।
साचा नाम मेरा आधारो,
बाजै पंच सबद तित घर सभागे ।
घर सभागै सबद बाजै,
कला जित घर धारीआ ।
पंच दूत तुध बस कीते
काल कटक मारीआ ।
धुरि करम पाइआ तुध जिन कउ,
से नाम हरि के लागै ।
कहै नानक तह सुख होआ,
तित घर अनहद बाजै ।

आनन्द सुनो वडभागिओ,
सगल मनोरथ पूरे ।
पार ब्रह्म प्रभु पाइआ,
उतरे सगल विसूरे ।
दुख रोग संताप उतरे,
सुणी सची वाणी ।
संत साजन भए सरस,
पूरे गुर ते जाणी ।
सुणते पुनीत कहते पवित,
सतगुरु रहिआ भरपूरे ।
बिनवंत नानक गुर चरण लागे,
वाजे अनहद तूरे ।

व्याख्या (आनन्द साहिब जी की)

बुद्धि मां है और मन उसका छोटा सा बेटा है। बुद्धि बहुत ही चंचल होती है यह मन को भी घुमा देती है परन्तु नित्य प्रति के अभ्यास से तथा गुरु कृपा से यह मन बस में आ गया।

जैसा कि गीता में अर्जुन ने प्रशन किया--

यह मन महावाहो कठिन दृढ़ है घना
मन साधना दुष्कर दिखे जैसे हवा का बाँधना

तो भगवान ने उत्तर दिया—

चंचल असशय मन महावाहो दृढ़ है धना

जब संतों से सुन कर जीव ने रोज प्रार्थना की कि क्या ?

"ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुध ध्याई"

तो एक दिन ऐसा आ गया कि बुद्धि स्थिर हो गई इसने मन को भी रोक लिया तो मन बुद्धि से कहने लगा अब मैं आनन्द मय हो गया हूं क्योंकि मैंने सतगुरु पा लिया है अर्थात मैं संतों के साथ जुड़ गया हूं। यह वाहरी प्रपंच माया मेरे ऊपर बिल्कुल असर नही कर सकती जैसा कि रामायण में आया है—

'जाने वही जेही देओ जनाई
जानत तुम्हहि तुम्हहि होये जाई'

अर्थात जिस पर आप प्रभु कृपा कर देते हैं वही जान जाता है और उसको जान कर वह उसी का रूप हो जाता है।

जब इस मन की सहज अवस्था हो गई तो इसमें बधाईआ बजने लगी। बधाई कब दी जाती है जब किसी की जीत हो जाती है तो मन ने बुद्धि को जीत लिया वह अब मेरा मन स्वतः राम नाम की ओर ही खिचने लगा, मन का परिवार है इन्द्रियाँ जो हमारा मन चाहता है वही हमारी इन्द्रियाँ करने लगती है, उदाहरण के लिए अगर मन चाहता है चटपटे मसालेदार व्यंजन चाहिए तो यह दसो इन्द्रियाँ उठ कर बनाने लग जाती है।

ठीक इसी प्रकार, जब मन केवल अपने राम को ही चाहने लगा तो सारी इन्द्रियाँ इसी में ही (Busy) हो गई हमारे पैर सतसंग की ओर बढ़ने लगे, आँखो में दर्शन की अभिलाषा हुई कानों में भजन सुनने की इच्छा जाग्रत हुई सारा परिवार मिल कर चरणों में लग गया, यह सब सतगुरु की कृपा से ही हुआ।

उन्होंने बार बार इस भूले मन को प्रभु की ओर लगने के लिए ही संकेत किया।

'भूले मारग जिनहि बताया
ऐसा गुरु वडभागी पाया'

बुद्धि ने मन को कहा हे मन अब तू सदा हरि के साथ ही रह, मैं तुम्हे चंचल नही करूगी। अगर इस प्रकार हमारा मन सदा नाम चिन्तन में ही लगा रहेगा तो यह न सुख का भागी बनेगा न दुख का सदा अपने

प्यारे के साथ ही रंग रलियां मनाएगा इसलिए सब दुख खतम हो गये ।

जब ऐसी अवस्था हो जाए तभी समझो कि तुम्हे भगवान ने अंगीकार कर लिया है। उसके तो सारे काम भगवान आप ही करते हैं। जब हम अपनी कुछ भी शक्ति नही रखते सब उसके अर्पण कर देते हैं तो हमारे आगे पीछे एक बड़ी शक्ति काम करती है वह तो सर्व कला समरथ है ।

फिर साचे साहिब के घर क्या नही--

जो मांगे ठाकुर अपने ते,
सोई सोई देवे ।

परन्तु भक्ति का खजाना तो उसे ही मिलता है जिसे वह आप कृपा करके देवे, भक्ति क्या है सदा अपने राम का नाम, उसी की प्रशंसा, उसी से सलाह करनी, इस प्रकार मन में शब्द घनेरे बजने लगे ।

शब्द

हरि चरण कमल की टेक,
सतगुरु दिती तुसि के बलराम जीउ ।

हरि अमृत भरे भंडार सभ किछ हैं घर,
तिस के बलराम जीउ ।

बाबुल मेरा वड समरथा,
करण कारण प्रभु हारा ।

जिस सिमरत दुख कोई न लागै,
भउजल पार उतारा ।

आदि जुगादी भगतन का राखा,
उसतति करि करि जीवा ।

"नानक" नाम महारस मीठा,
अनदिन मन तन पीवा ।

व्याख्या (हरि चरण कमल की टेक)

सतगुरु ने प्रसन्न हो के मुझे एक अटूट खजाना दे दिया है। वह क्या है? हरि के चरणों का आसरा। हरि के चरण क्या है? हरि का नाम, संतों के मंत्र। जब हम श्रीराम नाम उच्चारण करते हैं या कर कृपा का मंत्र बोलते हैं तो मानो हमने हरि के चरण पकड़ लिये। परन्तु यह कैसे हुआ? नित्य प्रति सतगुरु का संग करने से जैसे कि विवेकानन्द जी ने भी कहा है :—

1. When You see a doctor you think of medicines.
2. When you see a lawyer you think of cases.
3. When you see a saint you think of God.

वही विचार यहाँ प्रगट है कि हमारे अन्तर आनन्द के भंडार हैं। हम आनन्द स्वरूप हैं परन्तु इस माया में फस कर हम सुख दुख अनुभव करते हैं।

शब्द

मेरे राम राइ तू संता का सत तेरे ।
तेरे सेवक को भउ किछु नाही,
जम नहीं आवै नेरे । मेरे राम राइ..........
जिसके सिर ऊपर तू सुआमी,
सो दुख कैसा पावै ।
बोल न जाणै माया मद माता,
मरण चित्त न आवै । मेरे राम राइ..........
जो तेरे रंग राते स्वामी,
तिन्ह का जनम मरण दुख नासा ।
तेरी बखस न मेटे कोई,
सतगुरु का दिलासा । मेरे राम राइ..........
नाम धिआइन सुख फल पाइन,
आठ पहर आराधहि ।
तेरी शरण तेरे भरवासे,
पंच दुस्टं ले साधहि । मेरे राम राइ..........
ग्यान ध्यान किछु कर्म न साधा,
सार न जाणा तेरी ।
सभ ते बडा सतगुरु नानक,
जिन कल राखी मेरी । मेरा राम राइ..........

"श्रीराम"

व्याख्या (मेरे राम राइ)

परन्तु जब हमारा मन प्रभु के चरणों में समाहित हो हो गया तो हम इन सब सुखो दुखो से ऊहर हो गये। इसीलिए कह रहे हैं हे मेरे प्यारे राम आप के घर में तो सब कुछ है हमें भी यही दान दे दो कि हमारा मन निरन्तर चिन्तन करता रहे और आनन्दमय रहे।

जब समरथ मिल जाता है तो हम भी समरथ (समर्थ) हो जाते हैं। जैसे संसार में भी कोई बड़ी Post वाला या Approach वाला कोई कह दे कि आप चिन्ता न करो सब हम सभांल लेंगे तो हमें पूर्ण आश्रय मिल जाता है। ठीक इसी प्रकार जीव सदा अपने समरथ का आश्रय लेकर निर्भय हो जाता है जैसा कि हम सब रोज कहा करते हैं :—

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

क्योंकि उसका आश्रय लिया है, जो पूर्ण है, समस्त शृष्टि उसके आश्रय में है, तथा दीन दयाला है। सदैव दीनों की रक्षा करता है।

"श्रीराम"

शब्द

मेरे साहिबा तेरे चोज विडाना ।
पुड़ धरती पुड़ पानी आसण,
चारि कुंट चउबारा ।
सगल भवन की मूरति एका,
मुख तेरे टकसाला । मेरे साहिबा...........
जल थल महिअल भरपूर लीणा,
आपे सरब समाणा । मेरे साहिबा...........
जह जह देखा तह जोति तुम्हारी,
तेरे रुप किनेहा ।
इकत रुप फिरहि परछना,
कोई न किसही जेहा । मेरे साहिबा...........
अंडज जेरज उतभुज सेतज,
तेरे कीते जंता ।
एक पुरब में तेरा देखिआ,
तू सभना माहि रवंता । मेरे साहिबा...........
तेरे बहुते मैं एक न जाणिआ,
मैं मूरख किछु दीजै ।
प्रणवति "नानक" सुन मेरे साहिबा,
डुबदा पथरू लीजै । मेरे साहिबा...........

'श्रीराम'

व्याख्या (मेरे साहिबा तेरे चोज विडाना)

ए मेरे मालिक ! मेरे साहब ! मेरे प्यारे गुरुदेव ! तेरे खेल निराले हैं। जो तेरी शरण में आ पड़े उन्हे आपने दिव्य दृष्टि प्रदान की उन्होने आप को हर समय जल थल में, कण कण में तुझे ही देखा और कहा "रामजी राम राम" अर्थात हे राम हम तो हर समय आप को ही याद करते हैं। यह संसार के सारे जीव तो बुद बुदे हैं इनका क्या भरोसा कब छिप जायें इसलिए आप का सानिध्य सदा अंग संग रहे ।

"अदि सच जुगादि सच
है भी सच नानक होसी भी सच"

अब अपने प्यारे की रचना देख देख कर भी आश्चर्य होता है, ए मेरे प्यारे राम आप का रूप कैसा है एक ज्योति सब इन मिट्टी के बर्तन में रखी है और इतनी सृष्टि सारी एक रूप हो कर भी किसी की किसी से शकल नही मिलती यह सारे खेल आप के ही तो हैं।

चार प्रकार के जीव आपने उत्पन्न किये हैं कुछ तो अंडों से पैदा होते है, कुछ धूल से ही उत्पन्न हो जाते है, कुछ जल में ही उत्पन्न हो जाते है यह सब जंतु आपने ही

उत्पन्न किये है परन्तु जब से मेरे सतगुरु ने मुझे दिव्य दृष्टि दी है सब में मुझे आप की ही ज्योति अनुभव होती है।

आप के गुण तो बहुत है मैं तो कुछ भी नही जानता, मैं तो मूरख हूं आप इसे बुद्धि दीजिए आप की कृपा से तो डूबते पत्थर भी तर जाते है इसलिए इस डूबते हुए पत्थर को आप ही तरने की शक्ति देना इसको ज्ञान की आँख सदा खुली रहे ताकि यह केवल आप को ही पहचाने।

शब्द

हरि जीउ सदा तेरी सरणाई,
मेरे राम जीउ सदा तेरी सरणाई ।
जिउ भावै तिउं राखो स्वामी,
ऐह तेरी वडिआई । हरि जीउ..........
जो तेरी सरणाई हर जीउ,
तिस तू राखन जोग ।
तुध जेवड मैं अवरू न सूझै,
न को होआ न होग । हरि जीउ..........
जो तेरी सरणाई हर जीउ,
तिस को करे प्रतिपाल ।
आप कृपा कर राखो प्रभु जी,
पोह न सकें जम काल । हरि जीउ..........
तेरी सरणाई सच्ची हर जीउ,
न एह घटे न जाए ।
जो दर छोड़ दूजै भाय लागै,
जमै ते मर जाए । हरि जीउ..........
जो तेरी सरणाई हर जीउ,
तिन्हा दुख भुख किछु नाही ।
'नानक' नाम सलाहे सच तू,
सच्चे माहि समाहि । हरि जीउ..........

व्याख्या (हरि जीउ सदा सरणाई)

अपने प्यारे राम के कई नाम है कभी प्यार आता है तो कहते है हे हरि जीओ सदा अपनी ही शरण में रखना फिर शरणागति का अर्थ भी बता रहे हैं अपने आप को कुछ भी न मानना जैसे भी वह रखे उसमें सदा सन्तुष्ट रहना और हर कर्म में उसी की ही बड़ाई समझना अपना तो कुछ है ही नही। जिनकी ऐसी बुद्धि बन गई है वही सही अर्थो में उस प्रभु की शरणागति में हैं।

दूसरे अर्थो में सदा प्रभु की कृपा मांगते रहना अपने आप को दीन (छोटा) बच्चा समझ कर सदा शरण में ही रहना उसी का आश्रय लेना और कहना :—

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला—!!

जैसे आज कल Computor युग आ गया है जो भी हम Information डालते है उसका Result Computor साथ ही साथ बताता जाता है ठीक इसी प्रकार गुरु महाराज शरणागति का Result भी साथ साथ बता रहे है।

कहते हैं जो भक्त सदा अपने राम जी की शरण में रहता है उसी की भगवान रक्षा करते हैं, वह भक्त भी अपने भगवान के समान संसार की कोई भी वस्तु नही समझता है।

'तीन लोक का राज
बह मने नही मानता'

वह कहता है मेरे प्यारे राम के नाम जैसा न कोई हुआ है और न कोई होगा। जो सदा शरण में रहते हैं उनकी प्रतिपालना आप करते हैं शेष जीवों की पालना करता है अर्थात उनको अपने अपने कर्मों के अनुसार फल देता है परन्तु जो शरण में आ जाते है उनके कर्म भी काट देता है जैसा कि गीता में भगवान ने कहा—

ज्ञानाग्नि दग्ध कर्मणासु

अर्थात ज्ञान की जब अत्यधिकता हो जाती है तो शुभ तथा अशुभ सब कर्म जल जाते हैं इसी को गुरु साहब ने प्रतिपालना कहा है।

प्रभु की शरणागति हमें सत्यता की ओर ले जाती है अमरता प्रदान करती है और जगत की शरणागति हमें नाश की ओर ले जाती है। जब हम अपने प्यारे के नाम की लगन लगा लेते है तो यह लगन दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है अंत समय में भी यही ध्यान रहता है इसलिए

इसे आगे भी अच्छा जन्म प्राप्त होता है तो फिर वैसा ही भाव वैराग्य आदि सदगुण पनपने लगते है इसका यह अर्थ हुआ कि वह सच्ची लगन कम नही हुई और बढ़ती गई।

इस लोक में भी वह सुखी रहता है क्योंकि उसकी सारी तृष्णाए समाप्त हो जाती है सन्तोष मिल जाता है इस तरह से जीव सदा सुखी हो जाता है और साचे में ही समा जाता है।

ज्यो जल में जल आए खटाना
ज्यों ज्योति संग ज्योति समाना

इसलिए सदा हमें उस अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक की शरणागति में ही रहना चाहिए और रोज पाँच माला कर कृपा की अवश्य ही फेरनी चाहिए ज्यादा बेशक हो जाए इससे कम नही होनी चाहिए।

'श्रीराम'

शिव जी की स्तुति

भज शिव हर शंकर गौरी श्याम,
वन्दे गंगा धरणी श्याम।
शिव रुद्रम पशुपति विश्वनाथ,
कलिहर काशी पूर्ण नाथ।
भज वारि लोचन परमानन्दा,
नीलकंठ तुम शरणम्।
शिव असुर निकंदन वाजक वंदन,
सेवक के प्रतिपाला।
शिव आवागमन मिटाओ शंकर,
भज शिव बारम्बारा।

भज शिव हर............

व्याख्या (शिव जी की)

भोले शंकर का ध्यान उनकी स्तुति पूजा प्रतिदिन अवश्य करनी चाहिए। क्योंकि भगवान राम भी निरंतर भोले नाथ को ही भजते रहते हैं। वह रामायण में स्वयं कहते हैं कि—

"शिव द्रोही मम दास कहावैं
सो नर सपनेहु मोहि न भावैं"

और भोले नाथ कहते हैं कि, मेरी पूजा के साथ साथ निरंतर श्रीराम का जप भी करते रहो! एक श्वास भी व्यर्थ मत गवाओ! अपने हृदय घर को निरंतर राम नाम के जल से भरते रहो। तभी जीवन की सफलता है! यही मेरी पूजा है। इसी से मैं प्रसन्न होता हुं।

"श्रीराम"

भजन

चरणों में शीश नवाया,
तेरी कृपा को मैंने पाया।
तूही मेरा पिता और माता,
तूही मेरा भाग्य विधाता।
कर्मों का लेखा मिटाया,
तेरी कृपा को मैंने पाया।
चरणों में...........

तूने भर दो मेरी झोली,
अब तेरी ही मैं हो ली।
तूने कृपा कर अपनाया,
तेरी कृपा को मैंने पाया।
चरणों में...........

तेरे चरणों की मैं दासी,
तेरे दर्शन की मैं प्यासी।
तूने नाम का अमृत पिलाया,
तेरी कृपा को मैंने पाया।
चरणों में...........

हर श्वास में सिमरण तेरा,
हर करम में चिन्तन तेरा।
फिर आनन्द आनन्द आया,
तेरी कृपा को मैंने पाया।
चरणों में...........

भजन

श्री राम के चरणों में जो भी आ गया,
तीन लोको की नियामत पा गया।
श्रीराम...........

राम का सिमरन किया हनुमान ने,
बोल जय श्रीराम राम का बन गया।
श्रीराम...........

कर कृपा के मंत्र को जिसने जपा,
सारे कारज आप उसके कर गया।
श्रीराम...........

राम का सिमरन किया जिस भक्त ने,
राम ने आकर उसे अपना लिया।
श्रीराम...........

बन्दे तू भी जप ले अब श्री राम को,
तर गया जो राम के गुण गा गया।
श्रीराम...........

निन्दा चुगली छोड़ भज श्रीराम को,
राम को भज राम में ही समा गया।
श्रीराम...........

शब्द संकीर्तन

बोल हरि नाम बोल हरि नाम,
बोल हरि नाम सफल सा घड़ी।

बोल............

देख हरि देख देख हरि देख,
तेरे चारो ओर हैं हरी हरी।
गुरु उपदेश सब दुख पर हरी,
मेरे मन भज हर नाम हरी।

बोल............

कर किरपा मेलो गुरु पूरा,
साध संगत संग सिंधु भव तरी।

बोल............

जग जीवन ध्याए मन हर सिमरी,
कोट कोटतंर तेरे पाप हरी ।

बोल............

हम मूरख को हरि कृपा करी,
जन 'नानक' तारिओ तरन हरी।

बोल............

भजन

निल राम सरोवर में नहाया करो,
तेरे प्यारे प्यारे दर्शन पाया करो।
राम नाम जैसा तीर्थ न कोई,
राम नाम जैसा दान न कोई।
नित बोरी पैबोरी लुटाया करो,

तेरे प्यारे..........

राम नाम जैसा जाप न कोई,
राम नाम जैसा ताप न कोई।
नित राम की धूरि लगाया करो

तेरे प्यारे..........

राम नाम है शान्ति का दाता,
राम है सबका भाग्य विधाता।
नित चरणों में चित्त को लगाया करो,

तेरे प्यारे..........

श्रीराम के जैसा नाम न कोई,
श्रीराम के जैसा ध्यान न कोई।
श्रीराम का ध्यान लगाया करो,
और प्यारे २ दर्शन पाया करो।

नित राम..........

भजन

दे दो अपनी भक्ति,
मिटा दो सारी आसक्ति।
हर दम बोलूं मैं प्यारे,
तेरा नाम श्री राम।

दे दो...........

गीता माता समझावै,
जो भी शरण में आवै।
पाप उसके कट जावै,
हो जाए भव से वह पार।

दे दो...........

रामायण समझावै,
अब तो राम नाम गुण गा ले।
ले के राम का नाम,
हो जा भव से तू पार।

दे दो...........

ज्ञान बाइबिल सिखाता,
सच्ची राह बताता।
कर लो प्रेम तुम सबसे,
हो जा भव से तू पार।

दे दो...........

संकीर्तन अमृतवर्षा

ले लो हरि का नाम,
अमृत बरस रहा ।
अमृत बूंद सुहावणी,
मिल साधु पीवण हार ।

अमृत बरस रहा...........

अमृत पीओ सदा चिर जीओ,
सिमरत अनत अनंता ।
रंग तमाशा पूरण आशा,
कभी न व्यापै चिन्ता ।

अमृत बरस रहा...........

ऊंचे अपार बे अंत सुआमी,
कौण जानै गुण तेरे ।
गावते उधरे सुनते भी उधरे,
विनसै पाप घनेरे ।

अमृत बरस रहा...........

पशु परेत मुगध की तारे,
पाहन पार उतारे ।
नानक दास तेरी सरणाई,
सदा सदा वलिहारे ।

अमृत बरस रहा...........

अमृत वाणी अमिउ रस,
अमृत हरि का नाउ ।
मन तन हिरदै सिमिर हरि,
आठ पहर गुण गाउ ।

अमृत बरस रहा..........

सतगुरु तुम को होय दयाला,
संत संग तेरी प्रीत ।
कापड़ पत परमेश्वर राखे,
भोजन कीरतन नीत ।

अमृत बरस रहा..........

भजन

गोबिंद तू ही गोपाल तू ही,
श्रीराम तू ही वाहि गुरु तू ही।
मेरी रसना जपती तू ही तू ही,
मेरी आत्मा अन्तर तू ही तू ही।

गोबिंद..........

साजन भी तू ही संगी भी तू ही,
मेरा मीत सदा का तू ही तू ही।

गोबिंद..........

तेरे चरणों में मन को लगा जो लिया,
सच्चा साथी तुमको बना जो लिया।
अब श्वास श्वास में, रोम रोम में,
हर क्षण हर पल बस तू ही तूही।

गोबिंद..........

सतगुरू ने भेद बताया है,
श्री राम का मंत्र जपाया है।
मेरे रोम रोम के हर लय में,
बस तू ही तू ही, अब तू ही तू ही।

गोबिंद..........

भजन

मेरा जीवन सारा बीते,
तेरा नाम जपते जपते।
कोई बाधा न खड़ी हो,
तेरी राह पै चलते चलते। मेरा जीवन........

नैया मेरी भंवर में,
चप्पू तेरे हवाले २।
पक्का यकीन मेरा,
तेरी राह पै चलते चलते। मेरा जीवन........

मंजिल तेरी बुलाए,
मेरे पैर डगमगाए।
मैं पहुंच कर ही संभलूं।
तेरा ध्यान धरते धरते। मेरा जीवन........

जिस हाल में तू रखे,
खुश हो के मैं गुजारूं,
मैं जीवन अपना काटूं,
तेरे रंग में रंगते रंगते। मेरा जीवन........

सतसंग में मैं आऊं,
तेरा प्यारा दर्शन पाऊं।
मन शान्त करके जाऊं,
तेरी वाणी सुनते सुनते। मेरा जीवन........

सतगुरू का दर्शन पाए,
गुरूदेव मुस्कुराए।
श्रद्धा से शीश झुक जाए,
चरणों में हंसते हंसते। मेरा जीवन........

भजन

राम नाम में रंग ले चोला,
राम नाम में रंग ले।
दो दिन का यह जीवन तेरा,
क्या तू करता मेरा मेरा।
वैराग्य के रंग में रंग ले चोला,
राम नाम में रंग ले।
भक्ति बिना सब ज्ञान है थोथा,
ज्ञान बिना सब ध्यान है थोथा।
चित चरणों में रख ले,
चोला राम नाम में रंग ले।
संत मिले तो ज्ञान मिलेगा,
प्रभु ज्ञान से ध्यान मिलेगा।
सदा हरि का संग ले,
चोला राम नाम में रंग ले।
यह दुनियां है केवल सपना,
तेरा यहां नहीं कोई अपना।
संतों का सदा संग ले,
चोला राम नाम में रंग ले।
कर कृपा का मंत्र उचारो,
श्रीराम को उर में धारो।
जीवन सफल बना ले,
चोला राम नाम में रंग ले।

संकीर्तन

गोपाल तेरा आसरा
गोबिंद तेरा आसरा

सतगुरूजी तेरा आसरा
श्रीराम तेरा आसरा

वाहे गुरूजी तेरा आसरा
बेआसरों का आसरा

निरासरों का आसरा
चित्त चरण कमल का आसरा

चित्त चरण कमल संग जोड़िये
सिर दइये धर्म न छोड़िये

गोपाल तेरा आसरा
मेरा मन लोचे बुराईयां

गुरू सच्ची राह मत छोड़िये
गोपाल तेरा आसरा

भजन

हर दिन है नया हर पल है नया,
जब तेरा सिमरण मन में भया।
हर पल हर क्षण तेरी याद रहे,
मेरा प्यारा सतगुरू साथ रहे।
यही चाव नया उल्लास नया,
जब तेरा.........

तेरा सुन्दर दर्शन सुहाता है,
नित सिमरण ही मन भाता है।
तेरी शरण में आए–करो दया,
जब तेरा.........

तू ही मेरा कर्म विधाता है,
तू ही मेरा पिता और माता है।
सच्चा नाता मैं अब तुम संग किया,
जब तेरा.........

श्रीराम तू ही और श्याम तू ही
वाहे गुरू तू ही गोबिन्द तू ही।
सच्चा नाता तुम संग जोड़ लिया,
जब तेरा.........

पल पल तेरा नाम उचारेंगे,
श्रीराम को उर में धारेंगे।
यह जीवन तू ने संवार लिया,
जब तेरा.........

"श्रीराम"

मधुर संकीर्तन

श्रीराम हरे, श्रीराम हरे,
राधा कृष्ण हरे, गोपी कृष्ण हरे।
जो हरिजन बन तो ऐसा बन
कि हरि सिमरन की हद कर दे।
भजन के जोर से यमराज का
खाता भी रद्द कर दे।

श्रीराम हरे..........

बन्धेगा तार सिमरन का
तो एक दिन तार भी देगा।
उसी का नाम अपने,
नीच दासों की खबर लेगा।

श्रीराम हरे..........

नहीं कलियुग यह कर युग है,
यहां करनी कमा ले तू।
वज़न पापों का सिर पर है,
उसे कुछ तो घटाले तू।

श्रीराम हरे..........

नहीं उनकी नजर पड़ती,
हरि सिमरन की राहों पर।

पड़ा परदा है मोती का,
अरे उनकी निगाहों पर ।
दिखाई उनको क्या देगा,
जो दिल के गन्दे हैं,
नजर उनको नहीं आता,
कि जो आंखों के अन्धे हैं ।
श्रीराम हरे, गोपी कृष्ण हरे,
राधेश्याम हरे, गोविंद हरे ॥

"श्रीराम"

शब्द

तेरा नाम रूड़ो रूप रूणो,
अति रंग रूणो मेरे रामईआ।
मारवाड़ि जैसे नीर बालिहा,
बेलि बालिहा करहला।
जिउं कुरक निसि नाद बालिहा,
तिउं मेरे मन रामईआ।
जिउं धरणी को इंद्र बालिहा,
कुसुम वास जैसे भंवरला।
जिउं कोकिल की अबु बालिहा,
तिउं मेरे मन रामईआ।
वारिक को जैसे खीर बालिहा,
चातृक मुख जैसे जलधरा।
मछली को जैसे नीर बालिहा,
तिउं मेरे मन रामईआ।
चकवी को जैसे सूर बालिहा,
मान सरोवर हंसुला।
जिउं तरणी को कत बालिहा,
तिउं मेरे मन रामईआ।
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि,
विरले काहू डीठुला।
सगल भवन तेरो नाम बालहा,
तिउं "नामे" मन बीठुला।

शब्द

हरि इकसै नाल मैं दोस्ती,
हरि इकसै नाल मैं रंग।
हरि इको मेरा सजणो,
हरि इकसै नाल मैं संग।

हरि इकसै नाल मैं गोसटे,
मुहँ मैला करे न भंग।
जाणे बिरथा जीअ की,
कदे न मोडे रंग।

हरि इको मेरा मसलती,
भंनण घडन समरथ।
हरि इको मेरा दातार है,
सिर दातिआ जग हथ।

हरि इकसै ही मैं टेक है,
जो सिर सभना समरथ।
सतगुरु संत मिलाइआ,
जिन तारिआ सगल जगत।

मन कीआ इच्छा पूरिआ,
पाया धुरि संजोग।
नानक पाया सच नाम,
सद ही भोगे भोग।

भजन

रामा तेरे चरणों की रज धूल जो मिल जाए,
सच कहती हूँ बस मेरी तक़दीर बदल जाए।
रामा..........

सुनती हूं तेरी रहमत दिन रात बरसती है,
इक बूंद जो मिल जाए मन की कली खिल जाए।
रामा..........

यह मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करूं,
जितना इसे समझाऊं उतना ही मचल जाए।
रामा..........

नज़रों से गिराना न चाहे जितनी सजा देना,
नज़रों से जो गिर जाए मुश्किल है सभंल पाना।
रामा..........

बस इतनी दया करना तुम सामने आ जाना,
हरि सामने ही रहना मेरा दम जो निकल जाए।
रामा..........

यांचना (नाम के लिए)

नाम दान देओ दाता जी
असी जाइये न जहान तो खाली।
कृपा करके बख्शों दाता जी,
असी नीच कीट संसारी।
हुण नेड़े हो के सुनी मालका,
मेरी कूक पपईऐ वाली।
नाम दान..........

जिन जिन नाम ध्याया तिन के काज सरे,
हर गुरू पूरा आराधिया दरगह साच खरे।
सानू नाम दान..........

हम भीखक भिखारी तेरे तू निज पति है दाता,
नाम देवो संगत जन को सदा रहु रंग राता।
सानू नाम दान..........

याचक मांगे दान देह प्यारिया,
देवणहार दातार में नित चितारिआ।
नाम दान..........

निखुट न जाई मूल अतुल भंडारिया,
नानक शब्द अपार सब कुछ सारिया।
नाम दान..........

जिन जिन नाम ध्याया गये मुस्कत घाल,
नानक ते मुख उजले केती छुटी नाल।
नाम दान..........

प्रार्थना (दिन चर्या हेतु)

ए शीश झुकावा मैं तेरे हज़ूर नानक,
बन जाए जिन्दगी दा ए दस्तूर नानक।
उठ अंमृत बेले विच तेरा नाम उचारा मैं,
तेरे नाम दी मस्ती विच ए जीवन गुजारा मैं।
जो मन्तर बख्शिआ ए ओ दिल विच धारा मैं,
फिर नाम सरोवर विच डुबियाँ लावां मैं।
तेरे नाम दी मय पीवां ते चढ़े सरुर नानक,
बन जाए जिन्दगी.........

इस अंमृत वाणी विच फिर मन नूं लावां मैं,
ए वाणी पढ़ के ते विच संगत जावां मैं।
सत संगत जाके ते यश सुना ते गावां मैं,
फिर धूल गुरू सिखा दी मस्तक विच लावां मैं।
मैंनूं हर था दिखदा ए तेरा ही नूर नानक,
बन जाए जिन्दगी...........

शिक्षा गुरू वाणी दी मेरे दिल विच बस जाए,
ऐ तीर अणियाला है इस दिल विच धँस जाए।
कई भूलिआं भटकिआं नूं ए रस्ता दस जाए,
किसी साधु दी रचना विच ए वाणी रस जाए।
मैं पानी ढ़ोवां बन उसदा कज़दूर नानक,
बन जाए जिन्दगी...........

तेरे कोलों लै शिक्षा ए जीवन बनावां मैं,
तसवीर तेरी हर दम इस दिल विच धारा मैं।
तेरे प्यारे मैं हर दम गुण सुना ते गावां मैं,
ढै कै तेरे चरणा विच भुला बख्शावां मैं।
हथ बंध के अर्ज करां कि बख्शो कसूर नानक,
बन जाए जिन्दगी..........

व्याख्या

इस शब्द द्वारा जीव अपने सतगुरू से विनम्र प्रार्थना करता है कि प्रभु इस प्रकार मेरा जीवन बना दो कि बस तुम्हारा नाम तुम्हारा ध्यान व तुम्हारा ही काम करके यह जीवन सार्थक बन जाए। मन में ध्यान, मुख में नाम व हाथ में काम यह तीनों क्रियाएँ अनवरत चलती रहे केवल तुम्हारे लिए। अर्थात पूर्ण समर्पण केवल तुम्हारे चरणों में रहे समस्त इन्द्रियाँ केवल तुम्हारे लिए ही कार्य करें।

जब मन में ध्यान तुम्हारा होगा मुख में नाम तुम्हारा होगा। फिर इन्द्रियाँ के द्वारा किया गया कार्य भी तुम्हारा ही होगा अहं समाप्त हो गया और बस तुम ही तुम रह गए तो यह शीश निरंतर तुम्हारे समक्ष झुका ही रहेगा अर्थात तुम्हारे नाम रूपी चरणों को कस के पकड़ कर आत्मा परमात्मा की वन्दना कर रही है।

"श्रीराम"

भजन

मैंने मन में श्याम रंग घोला,
श्याम के रंग में रगां है मैंने ।
अपने मन का चोला,
मैंने मन में..........

श्याम के रंग में रंग के मैंने,
दुख को दूर हटाया ।
मैंने जीवन का सुख पाया,
भूला अपना ओर पराया ।
मन मन्दिर के बन्द द्वार को.
मेरे श्याम ने खोला ।
मैंने मन में..........

मन उपवन की कली कली में,
घूंघट के पट खोले ।
भंवरा बन के कान्हा बोले,
भेज दिया है पिया के द्वारे ।
अपने मन का डोला,
मैंने मन में..........

करते प्रथम गुरु वन्दना,
तेरा नाम है दुख भंजना ।
करूणा करो मेरे प्रभु,
अब तो शरण मे लीजिए ।
मैंने मन में..........

भजन

रख लाज मेरी सतगुरु,
अपनी शरण में लीजिए।
करतार मेरे मंगल करण,
अपनी कृपा अब कीजिए।
रख लाज मेरी..........

तेरी कृपा है दुखहरण,
सन्ताप हारी सुख करण।
अब आ पड़ी तेरी शरण,
वरदान मंगल दीजिए।
रख लाज मेरी..........

तेरी दया तेरी कृपा,
हे नाथ हम मांगें सदा।
तेरे प्यार में होवे भक्ति,
प्रणाम स्वीकार कीजिए।
रख लाज मेरी..........

भजन

कैसे पाऊ प्रभु मैं दीदार तेरा,
कोई एसो सूझ दे दो हरि।
कैसी तेरी शरण लूँ पूर्णतया,
ऐसी बूझ बुझा दो मेरे हरि।

कैसे पाऊ........

तूने लाखों पापी तारे हैं,
नही गुण अवगुण बिचारे हैं।
तेरी शरण दासी आन पड़ी,
अब शरण में रख लो मेरे हरि।

कैसे पाऊ...........

जब जब भक्त बुलाते हैं,
प्रभु दौड़े दौड़े चले आते हैं।
दासी पर भी कृपा कर दो,
तेरे चरणों में रहे ये सदा पड़ी।

कैसे पाऊ...........

तेरी शरण में जो आ पड़ी,
विनती मेरी स्वीकार करो।
दासी जान के अपनी प्रभु,
मेरे जीवन का उद्धार करो।

कैसे पाऊ...........

तेरे (सिवा कोई नहीं है आसरा)
तू है निरासरो का आसरा।
तेरे दर पै सर जो रख दिया,
अब तो प्रभु स्वीकार करो।

कैसे पाऊं.....

लाखों को तूने तारा है,
अपना विरद आप संवारा है।
पतितो में नाम मेरा प्रभु,
अब अपनी कृपा से उद्धार करो।

कैसे पाऊं.....

तेरी कृपा से आनन्द आये प्रभु
मोह दुनिया का सारा भूल जाये प्रभु।
तूने जैसे लाखों को तारा है,
अब मेरा भी उद्धार करो।

कैसे पाऊं.....

आरती (श्री राम जी की)

जगमग जगमग ज्योति जगी है,
मेरे राम जी की आरती होने लगी है।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती,
साधु संग करे दिन राती,
फिर आनन्द की सरिता उमड़ी है।
जहाँ जहाँ जाउं तहाँ तेरी सेवा,
तुम सो ठाकुर अवरु न देवा।
घट घट देखूं ज्योति तुम्हारी,
सदा सदा जाऊँ बलिहारी।
वाद विवाद काहू सिउ न कीजै,
रसना राम रसायन पीजै।
सिया राम मय सब जग जानी,
करहुं प्रणाम जोरि जुग पानी।
गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा,
सब मोहि कह जाने दृढ़ सेवा।
घर सुख वीसआ बाहर सुख पाया,
कह नानक गुरु मंत्र दृढ़ाया।
ज्यों जल में जल आए खटाना,
त्यों ज्योति संग जोति समाना।
परम प्रकाश रुप दिन राती,
नही कुछ चाहिए दिआ घृत बाती।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ।

सर्वे भवन्तु सुखिना,
सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्ति,
मा कश्चि दुःख भागभवेत ।

सब पर दया करो भगवान,
सब पर कृपा करो भगवान ।
सब जन लेवें तुम्हारा नाम,
तभी होगा सबका कल्याण ।

सनातन धर्म की – जय हो ।
प्राणियों में – सदभावना हो ।
अधर्म का – नाश हो ।
सभी जीवों का – कल्याण हो ।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

हर हर महादेव जय जय श्री राधे,
जय श्री राम वाहे गुरू ।

"आरती - अखिल ब्रह्मांड नायक की"

गगन में थाल रवि चन्द दीपक,
बने तारिका मंडल जनक मोती।
धूप मलयानलो पवण चंवरो,
करे सगल बनराई फूलंत जोती।
कैसी आरती होई भवखंडना तेरी आरती,
अनहता सवद वाजंत भेरी।
सहस तव नैन नन नैन है तोहि कर,
सहस मूरति नना एक तोही।
सहस पद विमल नन एक पदगंध विन,
सहस तव गंध ईव चलत मोही।
सम महि जोति जोति है सोई,
तिस कै चानणि सभ महि-चानणि होई।
गुरू साखी जोति परगट होई,
जो तिस भावै सु आरती होई।
हरि चरण कमल मकरंद लोभित,
मनो अनदिनों मोहि आहि पिआसा।
कृपा जल देहि "नानक" सारिंग को,
होई जाते तेरै नाम वासा।

"श्रीराम"

"अरदास गुरू सहिब जी की"

पवन गुरू पानी पिता माता धरति महत,
दिवस राति दुई दाई दाईआ खेलै सगल जगत।
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरम हदूर,
करमी अपो आपणी के नेड़ै के दूर।
जिनी नाम धिआईआ गए मसकति घालि,
'नानक' ते मुख उजले केती छुटी नालि।
तू ठाकुर तुम पै अरदास,
जिउ पिंड सब तेरी रास।

तुम मात पिता हम बालक तेरे,
तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे।
कोई न जाने तुम्हरा अंत,
ऊँचे ते ऊँचा भगवंत।
सगल समग्री तुम्हरे सूत्रधारी,
तुम ते होए सो आज्ञाकारी।
तुम्हरी गति मिति तुम ही जाणी,
नानक दास सदा कुरबाणी।

तुध आगे अरदास हमारी,
जिउ पिंड सब तेरा वाहि गुरू।
कहो नानक सब तेरी वडियाई,
कोई नाम न जाणै मेरा वाहि गुरू।

प्रार्थना

हे सर्व शक्ति मान पिता
हम आप के बच्चे हैं
आप हमारी रक्षा करना
हमें दुर्गुणों से बचाना
हमें सदगुण प्रदान करना
हम क्रोध को–शान्ति से जीते
लोभ को–संयम से जीते
मोह को–प्यार से जीते
अहंकार को–विनम्रता से जीतें
पल पल में आप का ध्यान करें
हमारी द्वैत बुद्धि को मिटाना
सब के घर में सुख शान्ति देना
रोगों का–नाश हो
क्लेशों का–नाश हो
बस यही प्रार्थना है
स्वीकार करो स्वीकार करो स्वीकार करो
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

प्यारे प्रभु का दर्शन कैसे हो?

हर व्यक्ति प्रभु को पाना चाहता, उनके दर्शन करना चाहता है. उन्हें साक्षात अपने सम्मुख देखना चाहता है, या जो मन्दिर आते हैं, थोड़ा सा भी प्रभु का गुण गान कर लेते हैं या सतसंग में हाजिरी लगा आते हैं, स्वयं को प्रभु के दर्शनों का अधिकारी मानने लगते हैं, चाहते हैं कि अब तो प्रभु हमारे सामने मुरली लेकर या धनुष बाण लेकर आकर खड़े हो जायें। तो प्रभु क्या मूर्ति से निकल कर मनुष्य के रूप में आप के समक्ष खड़े होंगे? ....नहीं!

वह परम पिता तो कण कण में, हर स्थान में, हर समय व्याप्त है। उसका अपना कोई भी रूप नहीं, रंग नहीं, आकार नहीं। वह तो आप की भावना के अनुसार ही अपना स्वरूप धारण करता है व आप के समक्ष प्रकट होता है। वह हर काल में था—है, व रहेगा, वह तो न जन्म लेता है न मरता है फिर भी हर क्षण हर पल विद्यमान है, वायु के समान एक क्षण को भी हम उसके बिना जीवित नहीं रह सकते, वही प्यारे प्रभु का अंश जब

इस शरीर से निकल जाता है तो यह निर्जीव या मृतक हो जाता है। जिसे नष्ट कर दिया जाता है। अब प्रभु का दर्शन हम केवल जीवित मनुष्य शरीर द्वारा ही कर सकते हैं, इसमें निहित प्रभु का अंश ही हमारी आत्मा है—उस आत्मा को जब संतों की वाणी जाग्रत कर देती है—तो इसमें परमात्मा को प्राप्त करने उसे देखने की तड़प पैदा हो जाती है। और हम ग्रन्थों के अनुसार गढ़ी हुई मूर्तियों में प्रभु को खोजते हैं। उनका दर्शन करना चाहते हैं, उनको साकार रूप में देखना चाहते हैं। यह आत्मा के जाग्रत होने का लक्षण है। किन्तु जब तक उस जाग्रत आत्मा में असीम तड़प नहीं होगी तब तक प्रभु का दर्शन सम्भव नहीं। अर्थात् (वह तड़प कैसी हो जो प्रभु के दर्शन का साधन बने) ?

जब यह नश्वर शरीर पूर्ण रूप से केवल प्रभु के दर्शन ही करना चाहे अर्थात् जिस समय शरीर की यह अवस्था हो कि..................शरीर में स्थित सभी इन्द्रियाँ, इन्द्रियों के समस्त कार्य केवल प्रभु या सतगुरू के लिए ही किए जा रहे हैं। जैसे नेत्र केवल अपने प्यारे का दर्शन करना चाहते हैं, कान केवल प्यारे का गुणगान सुनना चाहते हैं, बस वाणी केवल उसका प्यारा नाम ही बोलना चाहती है, हाथ केवल प्यारे की सेवा करना चाहते हैं, चरण केवल सतसंग में जाने को लालायित रहते हैं, हृदय में भी केवल प्यारे प्रभु या सतगुरू का ही हर क्षण ध्यान

रहता है व समस्त संसारी कार्य प्यारे प्रभु के सदके ही करता है तभी उसका दर्शन—साकार है। यदि इन्द्रियों को यह सब न मिले तो वह अपने प्रियतम की तड़प में निरंतर अश्रु प्रवाहित करती हैं—एक अवयक्त तड़प से व्यथित होती हैं। और वह दर्शन कैसा है ?

उस तेजोमय बिराट, बे अंत प्रभु को यदि शरीर के सारे रोम आँख बन कर दर्शन करें तो भी कम है, शरीर के सारे रोम यदि कान बन कर गुणगान सुनें तो भी कम है, शरीर के सारे रोम यदि वाणी बन कर उसका नाम उच्चारण करें तब भी कम है, शरीर के सारे रोम यदि हाथ बन कर उसकी सेवा करें तब भी कम है, शरीर के सारे रोम यदि चरण बन कर उसके सतसंग का लाभ उठाएं तब भी कम है।

ऐसे प्यारे परवर दिगार को ससक्ष देखने के लिए मन के समस्त विकार, उसके नाम सिमरण व ध्यान से पूर्ण रूप से नष्ट कर देने हैं, और यह पूर्ण रूप से तो नष्ट होते भी नहीं, यह तो पल पल उठती इच्छाओं के रूप में कूड़ा जमा करते रहते हैं। फिर क्या पल पल हम उसका नाम लेते हैं ? निष्काम भाव से केवल उसे ही भजते हैं नहीं ? फिर कैसे दर्शन होंगे ? क्या आप को इतनी अधिक तड़प है कि बस दर्शन के अतिरिक्त मुझे संसार में और कुछ भी नहीं चाहिए। अब आईए अपने प्यारे के दर्शन कर ही लें कैसे ?

अपने प्यारे सतगुरू के शरीर में—क्योंकि पारब्रह्म परनेश्वर—सतगुरू के शरीर में ही प्रकट होता है, वह हर काल में था, है, व रहेगा, उसका कभी अन्त नहीं होता। वह आप की श्रद्धा, निष्ठा, विश्वास व भावना के अनुसार आप को दर्शन देता है। उसके शरीर में समस्त देवता प्रकट हैं—आप की जैसी भावना होगी उसकी साकारता ही के दर्शन आप उस शरीर में करेंगे। देखने में साधारण लगने वाला शरीर एक ही समय में अनेकों रूप धारण कर लेता है—यानी जिसकी भावना जैसी होगी—वैसे ही दर्शन उसे प्राप्त होंगे— अब प्रधान हुई भक्त की भावना। नाम जप से ऐकाग्रता से निष्ठा से अपना मन निर्मल बनाईए फिर देखिये सतगुरू की निखरी हुई देदीप्यमान स्वरूप आपके अन्तर को अलोकित किये है— जो बाहर है उससे कहीं अधिक सुन्दर दर्शन अन्तर में विद्यमान है। इसे ही अनवरत नाम जप से अपना अहं नष्ट कर इस तेजोमयी शरीर में प्यारे प्रभु का दर्शन करो।

ऐकाग्रता से उनकी वाणी सुनो दिल में धारण करो मनन करो फिर उसका परिणाम आप के समक्ष प्रकट हो जावेगा। हर कार्य की ध्वनि में नाम सुनिए, अन्तर में श्रीराम देखो श्रीराम सुनो व उसी ध्वनि में ध्यान केन्द्रित कर दो—सोते में जागते में चलते हुए कार्य करते हुए श्री राम सुनने का अभ्यास बना लो फिर तो दर्शन ही दर्शन है। उसका नाम ही उसकी साकारता है।

धीरे २ यह इच्छा भी न रहेगी कि मैं दर्शन करना चाहती हूं क्योंकि नेत्रों में, कानों में, मन में जब वही समा जाएगा फिर किसका दर्शन ? कौन सा दर्शन ? वह तो आगे, पीछे, दाँये बाँये चारो ओर आप के चल रहा हैं, घूम रहा है, कार्य कर रहा है, अलग है ही नही, अपने पास होने का सुखद अनुभव वह स्वयं आप को करा देगा। श्रीराम ही बोलना है, श्रीराम ही सुनना है श्रीराम ही मनन करना है–यही दर्शन है और यही प्यारे की प्राप्ति है।

"श्रीराम"

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय,
यह अभिलाषा हम सब की, भगवान पूरी होय।
विद्या बुद्धि तेज बल, सब के भीतर होय,
दूध पूत धन धान्य से बंचित रहे न कोय।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश,
आशा तेरे नाम की, बनी रहे ममईश।
पाप से हमें बचाईऐ, करके दया दयाल,
अपना भक्त बनाय कर, सबको करो निहाल।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार,
हृदय में धैर्य धीरता, सबको दो करतार।
नारायण तुम आप हो, पाप के मोचन हार,
क्षमा करो अपराध सब, भव से कर दो पार।
हाथ जोड़ बिनती करूं, सुनिए कृपा निधान,
साधु संगत दीजिए, दया नम्रता दान।

॥ शान्ति पाठ ॥

ऊँ (ओइम्) धौः शान्ति अन्तरिक्ष शान्ति
पृथ्वी शान्तिः रामः शान्ति रोषधयः शान्तिः।
बनस्पतयेः शान्तिः विश्वे देवाः। शान्तिःब्रँह्म
शान्तिः सर्वगुण शान्तिःरेवा शान्तिः सामा शान्तिः रेधि।
ओइम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओइम्

जोर से बोलो

श्री राम

(तीन बार)

वाहे गुरू

(तीन बार)

हर हर महादेव

(तीन बार)

जय जय श्री राधे

(तीन बार)

राम जी द्वारा र[illegible]त पुस्तकों की नाम

प्रथम ... पूजा के फूल ... म
द्वितीय ... अमृत वर्षा ... सितम्ब
तृतीय ... ज्ञान अंजन ... म
चतुर्थ ... भक्ति सार ... सितम्ब
पंचम ... प्रेमाभक्ति ... अप्रै
षष्ठ ... संत वाणी ... ज
सप्तम ... अमोल वाणी ... जु
अष्टम ... प्रेम पीयूष ... दिसम्ब

विशेष —

अच्छी पुस्तक आपकी सच्ची सखी व जी
है जो समय-२ पर आपको चेतावनी देती
अतः पढ़ो मनन करो व अलौकिकता का अन

मुद्रक —
PRINT CEN
[illegible] जड-४३डी/११ [illegible] पुर म
[illegible] के [illegible] नई दिल्ली [illegible]

कृपा - धाम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

राम जी राम राम

कृपा धाम

C-2B, Janak Puri, New Delhi-110058. Ph. : 25517225